सिख धर्म में

गोआर राजपूतों के

अनमोल रतन

लेखक:

इन्दर सिंह वलजोत
व
करम सिंह वकील

कीमत नही सहायता राशी: र. 100/-

प्रकाशन काल: 14 जून 2012 (पहली बार)
प्रकाशन काल: 04 जनवरी 2014 (दुसरी बार)

सवयम पड़े दुसरो कों पड़ाये, पुसतक रदी बनने से बचायें।
साहितय मन से अपनायें, ग्यान के घर घर दीप जगायें।

प्रकाशन व संपादन :

सतसवरन यादगारी लाएवरेरी,
 # 4093, मलोआ कलोनी, चंड़ीगढ।
मो. 80549 80446 व 98157 48541

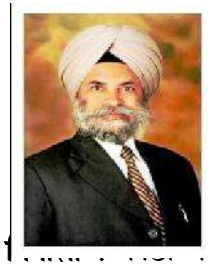

लेखक : इन्दर सिंह वलजोत
[illegible] 133, सैकटर 21-ऐ, चड़ीगढ । मोबाइल न. : 98157 48541
इ. आइड़ीज : www.valjot.com तथा valjot_singhinder@hotmail.com

प्रधान: कुल हिंद गोआर राजपुत सभा (रजि.) **उप प्रधान**, अंत्राशटरी हैंड़ो कोंसल व सचिव, भारती हैंड़ो फैड़रेशन **महाँ सचिव:** कुल हिंद वंजारा सेवा संग (पंजाव) **साहितक पुसतकें** : 1. गोआर राजपूतों बाजीगरों का इतिहास (2009) 2. मन तू जोत सरूप हैं (2010) 3. सिख धर्म व गोआर राजपूतों के अनमोल रतन (पहला संकलन - 2012 व दुसरा संकलन - 2014)

लेखक : करम सिंह वकील निवासी मकान न. 4093, मलोआ कलोनी, चंड़ीगढ - 160014 मोबाइल न.:- 80549 80446 तथा 98143 44446
इ. आइड़ी : karamvakeel@gmail.com **उप प्रधान** : केंदरी पंजाबी लेखक सभा (रजि.) जो 3300 मैंबर व 132 सदसय सभाओं का महाँ संग है। **महाँ सचिव** : कविता केंदर (रजि.) चंड़ीगढ । **संचालक** : सतसवरन यादगारी लाएवरेरी, मलोआ कलोनी, चंड़ीगढ **साहितक किताबें**: 1. जीवन संग्राम (1983) 2. माँ तेरे चरखे दी धुकर (2004) 4. मन तू जोत सरूप हैं (2011) 5. सिख धर्म व गोआर राजपूतो के अनमोल रतन (पहला संकलन - 2012 व दुसरा संकलन - 2014) **संपादित किताबें** : 1. जुगनूओं का काफिला (2004) 2. गोआर राजपूतों बाजीगरों का इतिहास (2009) 3. साजो-सोज-ऐ-सुखन (2009) 4. जीवन के रंग (2010), 5. विदरोही सुराँ (1857 के गदर में गुजर बरादरी) -2014 **प्रैस में**: 1. आखिर कयों ? 2. कसम कचिहरी दी 3. बचाओ भारत बदलो भारत तथा 4.लंड़िआले राह (नावलिट)

सारनी

1. सिख धम म गोआर राजपूत 4
2. शहीद भाई बचितर सिह 22
3. शहीद भाई दयाला जी 26
4. शहीद भाई मनी सिह 30
5. भाई लखी शाह बनजारा (बड़तीआ) 45
6. शवद जो हमे जोड़ता है - गोआर / गौर 52

महकते
खुशबू बिखेरते
फूल को सम्रपित

दो बातें ...

इस किताब का दूसरा संकलन निकालते हुए हम दोनो को बहुत खुशी हो रही है। आज किताब लिखना व फिर खूब पैसा लगा कर छापना, आसान काम न है, मगर अपने बंशजों के जिए इंसान कया नहीं करता ? हम चाहते हैं कि समाज के नौनिहाल व समाज इस किताब से फायदा उठाये व अपने अमर शहीदों के गोरवमईं इतिहास से सीख ले। समाज के हर खास व आम का यह फँज है कि वो कुछ सीखे व अपने हाथ की जलती मशाल आने वाली पीड़ी के अपने वंशजों के हाथ थमाये। अगर हमारे नोनिहाल अपना ग्यान व बजुरगों के तुजरवे को मिला कर कार्यं करे तो जळद व तेजी से तरकी कर सकते हैं। आप भाईं बचितर सिंह, भाईं मनी सिंह, भाईं दयाला जी व लखी शाह वंजारा जी के वारे में ग्यान इस किताब से हासिल करें। 'मन तु जोत सरूप है अतना मूल पछान' को मन में गहरे से बिठा कर हमें जीना होगा व रोजमरा जन जीवन मे ढालना होगा, सिरफ तोता रटन से कुछ नहीं होगा। बाणी गुरू तभी होगी जब उस से सीख लेंगे व दिल से अपनायेगे। हमारी कोईं गलती लगे, हमें जरूर बताए। हर मशवरे का हम दिल की गहराइओं से सवागत करेंगे।

वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतिह !

लेखक: इन्दर सिंह वलजोत व करम सिंह वकील

सिख धम म गोआर राजपूत

गोआर राजपूतों का सिख धम से अटूट सबंध है। सभी गोआर श्री गुरु नानक देव जी के अनुआई थे व आज भी ह जब भी कोई गोआर किसी दुसरे डेरे व टांडे म जाता है तो दोनों हाथ जोड़ कर पहले फ़तेह बुलाता यही गोआर को पहचान थी। आज भी सभी गोआर अपने घर म शादी के समय व किसी भी धार्मिक काम करने पे श्री गुरु नानक देव जी को अरदास करते और दुल्हे / लडके को शादी पे लाडे के पलू के साथ एक रुपिया गुरु नानक देव जी के नाम का बाँधते ह मगर जिन गोआर राजपूतों ने अमृत पान किया हो वो दस गुरु साहिबान तथा साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को समपत ह और वो पतक शुभ / अशुभ धार्मिक काय के समय साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का सहिज या अखंड पाठ करवाते ह! आज भी गोआर समाज म भले उन्हों ने अमृत पान किया है जा नहों, गुरु घर के लिए बहुत संमान तथा शधा है। श्री हजूर साहिब होली तथा दीपावली को गोआर बंजारा समाज बहुत उतशाह के साथ गुरु घर के दशन के लिए आत ह। भाट वहिओं म गोआर बंजारा राजपूतों के सिख धम के संबन्ध से बहुत समग्री मोजूद है। मोजूद समय म भी जेयादातर प्राणियो को अस्थिया हरिद्वार ले जा कर गंगा जी म परवाह करते ह व उस के बाद पिहोवा म पूजा अचना करते ह ये कारज उन के अपने पिरोहित / पंडित करते ह, जो इन के सारे कुनबे का बिओरा रखते ह ! पंडत चुनी लाल जी का बन्स हरिद्वार म गोआर बंजारा राजपूतों का आज भी प्रोहत है और हरिद्वार आने वाले गोआर बंजारा राजपूतों के आने के कारण को अपनी वहिओं म दज करते ह। इसी तरहां से भाट जो गोआर राजपूतों के कीर्तमानों / बहादरी के गुणगान करके अपने जज्मानों से बख्शीश लेते थे, भले ही आज यह काम नई पीडी के इसे ना अपनाने के कारण बन्द हो गया है मगर अभी भी करसिंधु, बनभौरी व भादसों के भाटों के पास गोआर राजपूतों के बारे म बहुत अमुलिया जानकारी उपलब्द ह।

इन वहिओं का जो विवरण गियानी गरजा सिह को सम्पादत किताब ' शहीद बिलास भाई मनी सिह ' तथा प्रोफैस्सर पिआरा सिह पदम् को सम्पादत ' गुरु को साखियन ' किताब म मिलता है, का अधयन करने से पता चलता है कि गोआर बंजारा

राजपूत समाज का गुरु घर और सिख धम से अटूट सन्बन्ध है। गियानी गरजा सिह जो भाटों को लिप्पी जानते थे और ईसी समाज से थे, बहुत मेहनत के साथ भट्टाखीरी से पंजाबी म इन वहिओं (जो आज भी भाटों के पास संभाल कर रखों ह) से अनेकों जानकारियां ली। गुरु को साखियां भाई सरूप सिह ने भाट वहिओं के अधार पे लिखी और प्रोफैस्सर पिआरा सिह पदम् ने इसे सम्पादत किया। इस पुस्तक म सिख धम तथा गोआर राजपूत समाज के सन्बन्ध म जो जानकारियां दी ह वो छट्टे गुरु साहिब श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी से शुरू होती है। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर साहिब श्री गुरु अजुन देव जी के समय को कोई लिखत जानकारी उपलब्ध नहों है अगर ह तो छुटपुट सी ही ह। २३.०२.२०११ को जब म मुखवाक को कथा श्री हरिमंदर साहिब से सुन रहा था, कथा वाचक गियानी जी ने कहा," जब श्री गुरु राम दास जी को अकबर बादशाह मिलने आये तो गुरु जी कोधरा (दलिया) छक रहे थे। बादशाह अकबर के मन म आया के उस को भी वही भोजन मिले जो गुरु जी छक रहे थे, तो गुरु रामदास जी ने भाई बल्लू राव को हुकम दिया कि बादशाह अकबर को पंगत म बिठा कर पशादा परोसा जाये। ऐसा माना जाता है कि कुछ बंजारों से गुरु हतिया हो गई थी और उन का दान कोई भी सवीकार नहों करता था। श्री गुरु नानक देव जी के समय भाई मनसूख बंजारा जिस का नाम सिख इतिहास म 'मनसुख' आता है, ने श्री गुरु नानक देव जी के सन्मुख पेश हो कर बिनती को और गुरु जी के चरणी लगा और उसी समय से बंजारे श्री गुरु नानक देव जी को गुरु मानते ह। शहीद बिलास भाई मनी सिह तथा गुरु को साखीआं म जो जानकारी उपलभ्द है, उन के आधार पर कहा जा सकता है कि गोआर राजपूत बंजारा समाज सदेव गुरु साहिबान को सेवा म रहा है भाट वही यादोबंसियों से पता चलता है कि जब श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी गवालिअर के किले म ५२ राजाओं संग नजर बन्द थे तो किले के दारोगा हरी राम बेटा नायक हरबंस लाल चन्दरबंसी यादव बरतिया कानौत गुरु साहिब को सेवा म था। भाट वही बताती है जब साहिब श्री गुरु हरगोबिन्द जी गवालिअर से बाहर आऐ तो एक दिन उन्होंन हरी राम के घर आराम करने के बाद गवालिअर से विदा ली।

जब साहिब श्री गुरु हरगोबिन्द जी गवालिअर से रिहा हो कर 'चक गुरु' (अमृतसर) आऐ तो बल्लू राऐ बेटा मूल चन्द जलाने पवार बोंझे का बंजरोंत और पदमा राये बेटा कौला दास हजावत चोहान भी गुरु के साथ थे। भाट वही तालोंदा परगना जोंद के अनुसार, जब श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी गवालिअर से 'चक गुरु' (अमृतसर) बादशाह जहाँगीर के साथ सम्त १६७६ फागुन सक्रांत के दिन आये उन के साथ बाबा बुड्डा जी बेटा बाबा सुघा रंधावा का, गुरदास बेटा ईशार दास भले का, बल्लू बेटा मूल चन्द जलाह्ने पंवार बोंझेका बंजरोंत और पदमा राये बेटा कौला दास हजावत चोहान और अनिया सिख फकोर आये।

जब साहिब श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी अपने ताऊ पिरथी चन्द को मुकाण के लिए गोइंदवाल से हैर गाँव गये तो उन के साथ बाबा बुड्डा जी, गुरदास जी और बल्लू राऐ जी साथ गऐ। भाट वही मुल्तानी सिन्धी, खाता जलाह्नों का, म इस तरहे है, " गुरु हरगोबिन्द जी महल छटा, ताऊ पिरथी चन्द को मुकाण के लिए गोइंदवाल से हैर गाँव परगंना पट्टी, गुरु मेहरबान के घर आये, साल सोलां सै स्तर पोख परविष्टे अठाईस , दिहों शुकरवार के साथ बेटा अजानी साहिब बेटा गुरु मोहरी जी का, पोता गुरु अमर दास महल तीजे का, बाबा बुड्डा जी राम दास बेटा बाबा सुघा रंधावा का, गुरदास बेटा ईशार दास भले का, बल्लू बेटा मूल चन्द जलाह्ने पंवार का आये। कौल जी दास बेटा अमँबीऐ हजावत का तथा अनिया सिख फकोर आये। गुरु जी के आने को ख़शी म दीपमाला को गई। श्री हरिमंदर साहिब म दीया बाती को सेवा गुरु मेहरवान को लाई। गुरु जी तीसरे दिन गुरु चक से विदा होकर गोइंदवाल म आ बिराजे।" (पन्ना ३१ गुरु कों साखियन)

इन वहीओं को लिखतों से यह पता चलता है कि बल्लू राय बेटा मूल चन्द जालाणा पंवार बीन्झे का बन्ज्रावत गुरु जी के हजुरी सिखों म हर समय गुरु जी को सेवा म रहता था। २८ अस्सू १६७८ बि: को श्री हरिगोबिद साहिब जी को पहिली जंग जो चन्दू के पुत्र करम चन्द तथा काने भगत के बेटे भगवाने घोरङ म हुई। इस जंग म और सिखों के साथ राजपूत गोआर बल्लू जी का भाई नानू जी तथा मांडन राठोर और इस का बेटा बिहारी, धूङा बेटा गोदरिया का शहीद हुए। भगवाना घोरङ मारा गया और इस का बेटा रत्तन चन्द जख्मी हुआ। भाट वही मुल्तानी सिन्धी, म इस बारे यूं लिखा है," मांडन बेटा उधे का पोता नाथू का परपोता ज्लाह्ने का बिहारी बेटा उदाने, धूङा बेटा गोदरिया का पोता रण मल गाँव रूहिला परगंना बटाला, भगवाना बेटा काने का घोरङ खत्री के

साथ जूझ कर घाइल हुआ सोलाँ सौ आठातेर अस्सू परविष्टे अठईस को भगवाना घोरङ मारा गया और इस का बेटा रत्तन चन्द जख्मी हुआ। "(पन्ना ३१ गुरु कों साखियन)

भाट वही मुल्तानी सिन्धी, खाता बंज्रोंतों का म नानू बेटा मुले के बारे लिखा है, "नानू बेटा मुले का पोता राओ का परपोता चाहर का बन्स बीन्झे का बंज्रोंत साल सोलां सौ आठातेर कार्तिक परविष्टे तीज के दिहों गाँव रूहिला परगंना बटाला के मल्हान गुरु का बचन पाए रतना बेटा भगवाना का जख्मी हुआ करम चन्द बेटा चंदू का वासी कलानौर को मार कर मरा. साथ मथरा बेटा भिखेका कोशिश गोत्र गोढ ब्रह्मिन, परागा बेटा गोत्तम का भावग गोत्र छिबर ब्रह्मिन, तथा गुरु जी को ओर से और जोधे साम माथे रण म जूझ कर मरे।" (पन्ना ३२ गुरु कों साखियन)

जहाँगीर को मौत के बाद शाहजहाँ गद्दी पर बैठा। गुरु घर के विरोधिओं ने उसे बहकाना शुरू किया और विसाख १६९१ बि: म जब श्री गुरु हरिगोबिद साहिब जी ने अपनी बेटी वीरो को शादी का दिन रखा तो शाही हुकम से मुग़ल फौज मुखलिस खान गोरखपुरी को कमान म अमृतसर पे हमले को गई। मुतजा खान भी इस जंग म शामल हुआ। घमासान का जंग हुआ अनेकां सिह शहीदीआं पा गऐ। इस जंग म शहीद भाई मनी सिह का दादा भाई बल्लू राय ने ९४ साल को उम्र म अमृतसर को लड़ाई म मुग़ल जरनैल मुत्वजा खान को मार कर१६३४ म शहीदी प्रपित को। जिस के बारे म भाट वही कर्रासदु परगना सफोदों म लिखा है ;- " बल्लू बेटा मुले का पोता राओ का पडपोता चाह्ड का चन्दर बंसी भाद्राजी गोतर पवार बन्स बिन्झे का बंज्रावत रंदोंत जलाना, साल सोलां सो इकानवे वैसाख परविष्टे सत्रैं सोमवार के दिन गुरुचक के मल्हान परगणा निझाला , गुरु का बचन पाय साहव माथे रण म मुत्वजा खान को मार कर मरा। साथ कोरत बेटा भिखे का पोता रइया का परपोता नरसी का बन्स भागीरथ का कौशिश गोत्र गॉड ब्राहमण मारा गया" (पन्ना ३२ गुरु कों साखियन)

बक्षी फरीद खां उरफ मुतजा खां जेसे जरनैल का मारा जाना कोई साधारण बात नहों थी। इस से खफा होकर सूबा लाहौर ने १७ पोह १६९१ बि: को सिख फौज का पीछा करते हुए मराझ के नजदीक गुरु जी को घेर लिया। घमासान का युद्ध हुआ। मांडन के बेटे सुखिया, जिस के साथ भाई मनीसिह को फूफो जी को शादी हुई थी, ने इसयुद्ध मे खूब जोहर दिखलाए और मोहरी फौजदार इब्राहिम को मार कर खुद भी शहीद हुआ। सुखा बेटा मांडन को शहीदी के बारे म भाट वही मुल्तानी सिन्धी म लिखा है, " सुखा बेटा मांडन का पोत्रा उधे का परपोत्रा नाथू का उड़ाना साल सोलां सो इकांनमे पोख परविष्टे सतारां मंगलवार के दिहों मराझ के मल्हान गुरु के हुकम गैल साम माथे जूझ कर मरा।" (पन्ना ३३ गुरु कों साखियन)

इस के चार महीने बाद विसाख १६९२ बी: को करतारपुर को जंग, जो श्री हरगोबिन्द साहिब और पदे खां,जिस का गुरु जी ने ही लालन पालन कोया था , और उस्मान खां झांगडी बसी पठाना वाले के साथ हुई।जह लङाई तीन दिन जारी रही इस लङाई म और जोधों के साथ गोआर राजपूत परीवार के भाई माधो पुत्र बल्लू राऐ शहीद हुआ और नठिया पुत्र बल्लू राऐ घाइल हुआ।इस बारे भाट वही मुल्तानी सिन्धी खता बंज्रोंतों ज्लानोंका म इस तर लिखा है,"नठिया बल्लू का पोता मुले का परपोता राओ का बंज्रोंत साल सोलां सै बानवे परविष्टे ईकतिएस मंगलवार के दिहों करतारपुर के मल्हान परगना जालंधर गुरु का हुकम पाए उस्मान खां झांगडी गैल भिरे। तीन पहिर युघ हुआ भाई माधो रण म सामे माथे जूझ कर मरा, नठिया गुरु का जोधा कई रण जूझते सूरमाओं गेल लङ कर घाइल हुआ,"(पन्ना ३३ गुरु कों सखियन) उसी दिन जब गुरु हरिगोबिद साहिब जी करतारपुर से फगवाङे को और आ रहे थे तुरक फौज पीछे से आ गई और जेठ को सक्रांत वाले दिन पलाही साहिब वाली जगह पे झङप हुई। इस झङप म बल्लू राऐ के पुत्र दासा और सुहेला शहीद हुऐ। जिस के लिऐ भाट वाही तालोंदा, परगना जोंद खाता रूमानो का म लिखा है, "दासा बेटा बल्लू सुहेला बेटा बल्लू का पोता मुले का परपोता चाहर के जलाने, जगु बेटा परमे का पोता भोजे का रमाणा वासी लाडवां परगणा थानेषर, साल १६९२ बी: जेठ मास को सक्रांति दिहों बुदवार फगवारा के मल्हान परगणा जल्लंधर पाछे आ रही फोज गेल साम माथे जूझ कर मरे," (पन्ना ३४ गुरु कों सखियन)

हम ने देखा श्री गुरु हरिगोबिद साहिब जी के साथ तुर्कों ने चार जंग लङे और इन म शहीद भाई मनी सिह के वड वडेरों न बङचङ कर हिसा लिया और शाहीदों प्रापत कों। इन लङाईओं के बिना भी गोआर राजपूत हर समय गुरु साहिब के साथ रहे। जब साहिबजादा राम राये जी उफ करता पुरख औरंगजेब के बुलावे पे दिल्ली गऐ तो भाई

दरिया जी बाको सिखों के साथ राम राये जी के साथ थे। जब गुरु हरिक्रिशन साहिब जी औरंगजेब के बुलावे पे दिल्ली गऐ तो उन के साथ भाई दरिया बेटा मूले का वासी अलीपुर शामाली परगणा मुल्तान भी साथ था। जब गुरु जी हरिक्रिशन साहिब जी जोती जोत समाये उनको असथीआं सतलुज दरिया म डाली गईं उस समय भी और सिखों के साथ भाई दरीया जी भी साथ थे। बात यहों पे समाप्त नहों होती जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को ओरंगजेब के हुकम से धम्धान से बन्दी बना कर दिल्ली लाया गय तो बाको सिखों के साथ गुरदास बेटा कोरत बरतियों का और दयाल दास बेटा माई दास जल्हाना बंज्रावत का बन्दी बना कर साथ लाऐ गऐ। इसके बारे म भाट वही जादव बंसीओं को खाता बङतीओं का म इस परकार लिखा है," गुरु तेग बहादर जी महल नोवां को गांव धम्धान परगना बांगर से आलम खां रूहेला शाही हुकम से दिल्ली को ले कर आया. साल सतर सो बाइस कतक मासे शुक्ल पखे ग्यारंस को साथ दीवान मतीदास, सतीदास आऐ...गुरदास आया बेटा कोरत बरतिया का...जेठा, दयाल दास आऐ बेटे माई दास जल्हाने बंजरावत के और सिख फकोर पकङ कर लाऐ गऐ." (भट्ट वही यादेव बंसियन को खाता बंज्रावतों का पन्ना ३४ गुरु कों सखियन)

बादशाह ने गुरु जी को कतल करने का हुकम दिय। कुंवर राम सिह कछुहारा ने इन्हे ऐसा करने से रोका.बादशाह ने कुंवर राम सिह को तरफ देखा और कहा, इन्ह इनको मिसल म, सतिगुरु को मति दास आदी साथिओं संग नजरबन्द किया जाऐ। गुरु जी के बंदी बन जाना सुन कर दीवान दरगह मल और चौपत राय वगैराह दिल्ली म रसीना नगरी आऐ. रानी पुष्पा देवी ने उन का अपने घर आने पे बहुत आदर किया, रहने को एकांत स्थान दिया. दरगह मल ने रानी से गुरु जी का हाल पूछा तो. आगे रानी ने इन्ह धीरज धराया और कहा गुरु जी जल्दी ही बंदी खाने से बाहर आ जाऐगे। संमत सत्रां सौ बाईस क्रिष्णा पखे पोख मास को पंचमी को गुरु जी दो मास तीन दिहों बंदी खाने म रहने के बाद बंदी खाने से बाहर रानी पुष्पा देवी के ग्रेह पहुंचे। (पना ७४ गुरु कों साखियन)

भाई दयाला जी को सेवा ओर गुरु घर के लिऐ निष्टा के कारन हों श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई दयाला जी को अपना 'दीवान' बनाया। गुरु तेग बहादर जी ने भाई दयाला जी के लिऐ कई हुकमनावे जारी किऐ जैसे लिखा है:- " भाई दयाल दास गुरु का बेटा है...और पटने को संगत को लिखा" भाई दयाल दास कहे, संगत गुरु का हुकम कर मानना, संगत के मनोरथ गुरु पूरे करेगा..."बनारस को संगत को लिखे हुकम नामों म भाई दयाल दास का नाम भी आता है। जेसे-" सरबत संगत बनारस को गुरु गुरु जपना,जनम सौरे संगत के मनोरथ गुरु पूरे करेगा"। कार संगत को एक सो छिहासट रूपे संगत ने भाई दयाल दास पास भेजे सो हजूर आऐ। संगत को बोह्ड़ी होई आगे कार भेट मनत सभी भाई दयाल दास को संगत ने लोच कर देना।संगत का रिजक वधेगा मनोरथ गुरु पूरे करेगा..." (पन्ना ९९ हुकमनावे गंडा सिह)

इन हुकमनावों से साफ हो जाता है कि साहिब श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई दयाल दास को 'मसंद' भी थापा था जो कार सेवा के लिए उगराही करते थे और गुरु को गोलक म पैसे जमां करवाते थे। जब श्री गुरु तेग बहादर जी १६७३ ई: म पंजाब वापस पहुंचे तो भाई दयाल दास भी उन के साथ ही पंजाब पहुंचे। जब श्री गुरु तेग बहादर जी कश्मीरी पंडतों को फरियाद सुन कर उन के भले के लिए बादशाह औरंगजेब से बात करने दिल्ली गऐ उस समय भाई दयाल दास जी, भाई मतिदास और भाई सतिदास जी गुरु जी के साथ थे। श्री गुरु तेग बहादर जी को तीन सिखों के साथ ' मलकपुर रंगड़ां ' से नूर मोहमद खान मिजा ,चोको रोपड़, ने बंदी बना सरहिद पेश किया। तीन महीने बस्सी पठाना बंदीखाना म रख कर सम्नत १७३२ मंगसर वदी त्रोसदी वीरवार के दिन श्री गुरु तेग बहादर जी को दिल्ली ले कर पहुंचे। दिल्ली म श्री गुरु तेग बहादर जी को बहत कष्ट दिया गए। धम बदलने को या फिर कोइ करामात दिखाने के लिए कहा गया, मगर श्री गुरु तेग बहादर जी ने जालिमों को कोइ बात न मानी और औरंगजेब को अकड़ को नकारते हुए आम जन्ता जनाधन के भले के लिए उन को और डट कर खडे व् औरंगजेब के जुल्मों सितम करने से रोका मगर हंकारी औरंगजेब न माना तथा ओरंगजेब के कहने पे, गुरु जी को डराने के लिए शाही काजी ने हुकम किया के गुरु जी के साथ बंदी बनाये सिखों को भाई दयाला जी, भाई मतिदास तथा भाई सतिदास को कष्ट दे दे कर शहीद किया जाए।' गुरु कों साखियन" के पना ८३ पे यूँ लिखा है- " शाही काजी ने इन तीन सिखों को फ़तवा दिया ये तीनो इस के साथी ह एस के सामने मार दिए जाऐं...अवल दयाल दास को

एक उबलते पानी से भरे देगचे म बंद करके मारा जाऐ..." इस तरह काजी का हुकम मानते हुऐ ज्लादों ने भाई दयाल दास जी को एह बडे देगचे म उबलते पानी म बिठा दिया। मगर वे गुरु का प्यारा अपने धम पे अडोल रहा और गुरु को ही रजा मानता हुआ शहीदी प्राप्त कर गया। मुख से उफ़ तक ना को.साफ है कि जहाँ छठे गुरु हरिगोबिद साहिब जी दवारा जुलम सितम के खिलाफ को गई लड़ाईओं म भाई मनी सिह के दादा, चाचा, ताऊ, फूफा और फूफा के बेटों ने अग्रिम पंक्तिओं म हो कर लडाई को और शहीद हुए वहीँ औरंगजेब के जबरों जुलम के विरुद्ध भाई मनी सिह के बडे भाई, भाई दयाला जी ने धम पे डट कर और गुरु को रज़ा को मानते बेमिसाल शहीदी प्रापत को। इतना ही नहों जब नावे गुरु श्री गुरु तेगबहादर जी को दिल्ली, चांदनी चौक म शहीद कर दीआ गया और औरंगजेब के खौफ से कोई भी सिख गुरु जी के पार्थिक शारीर को संभाल के लिए आगे नहों आया तो दिल्ली के कुछ सिख, संगत के रूप म आगे पीछे चल कर भाई लखी शाह बंजारा के पास पहुंचे और उन्ह सारी बात बताई। आधी रात्रि को भाई लखी शाह जी ने अपनी बैल गाड़ीआँ का घेरा डाल कर श्री गुरु तेगबहादर जी के पार्थिक शारीर को आदर सहित अपनी बैल गाड़ी म डाल रसीना गाँव (रकाब गंज) म पहुंच कर अपने घर को ही आग लगा कर श्री गुरु तेगबहादर जी के पार्थिक शारीर का अंतिम संस्कार करदीया इसबारे भाट वही जादोबंसीओं को खाता बरतीआँ कनौंतों का म लिखा है, "लखीआ बेटा गोधू का , नगाहिया, हेमां हाडी बेटे लखीऐ के जादो बन्सी बरतीऐ कनोत, नाइक धूमा बेटा काने का तूमर बिन्ज्लोत गुरु तेग बहादर जी महल नावां को लाश उठाऐ लाऐ, साल सतर सै बतीस मंघसर सुदी छठ गुरुवार के दिहों दाग दिया रसीना गाँव म आध घरी रेन रही"(पना ८५ गुरु कोआँ साखीआँ) सिख इतिहास म सिख बुधीजीवी श्री कान सिह नाभा मानता है कि मनीराम राजपूत गावं अलीपुर ने अपने पाँच पुत्र गुरु जी को अपण कोऐ. भाई बचित्तर सिह तथा उनके भाईओं का गुरु जी को अपण करने के बारे भाई कान सिह नाभा महान कोष म लिखता है :-

"भाई मनीराम जिलाः मुल्तान के गाँव अल्लीपुरा का वसनीक राजपूत था जिसने अपने पाँच पुत्र श्री गुरु गोबिद सिह को अपण किऐ.कलगीधर महाराज जी ने विसाख समन्त १७५६ को अमृत शका कर इनहे सिह सजाया यह पाँचों वीर (भाई उधे सिह, भाई अजब सिह, भाई अजैब सिह, भाई अनिक सिह तथा भाई बचितर सिह) सदा कलगीधर महांराज को सेवा म रहे" (भाई कान सिह नाभा महान कोष पन्ना ९५१)

जब श्री गुरु गोबिद सिह जी ने अमृत तयार कोआ गोआर राजपूत अमृत शक कर सिह सज गऐ और मनीराम से मनी सिह कहलाऐ और अपने सारे परिवार समेत दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिदसिह जी को हजुरी म रहे। जब पहाड़ी राजाओ के साथ लडाई समय पहाड़ी राजाओं ने हाथी को लोहे को तवियों से सजाया और हाथी के सर पर भी लोहे को कई तवीयॉ बांधी और हाथी को मदिरा पिला कर किले का कपाड तोडने को भेजा। यह खबर जब गुपत्चर ने साहिब श्री गुरु गोबिद सिह जी को दी तो गुरु जी ने दुनी चन्द को और इशारा करके कहा हमारा यह हाथी उस हाथी का मुकाबला करेगा। दुनी चन्द बहुत घबराया और रात्रि के अंधेरे म ही दीवार फांद कर अपने साथीओं के साथ भाग निकला। जब इस को खबर श्री गुरु गोबिद सिह जी को लगी तो गुरु जी ने कहा कोई बात नहों गुरु जी ने भाई बचित्र सिह को ओर इशारा कर कहा अब हमारा शेर मस्त हाथी का मुकाबला करेगा। भाई बचित्र सिह बहुत खुश हुऐ इस को सतगुर को मेहर समज कर मस्त हाथी से टक्कर लेने को तयार हो गऐ। श्री गुरु गोबिद सिह जी ने अपने हाथों से भाई बचित्र सिह को जंगी साजो समान से विभूषित किया और अपने हाथ से भाई बचित्र सिह को नागनी बरषा सोंपा। भाई बचित्र सिह गुरु जी का आशीवाद ले कर कुछ सिखों के साथ जंगे मदान को ओर झपटे अपना बचाव करते हुए बचित्र सिह ने हाथी के सर पर नागनी से ऐसा जोरदार प्रहार किया कि बरषा लोहे को तवियों को चीरता हुआ हाथी के सर म गहरा धुसा हाथी पीड़ा न सहारता हुआ पीछे को ओर अपनी फौज को ही रौंधते हुए भागा और साथ ही सिघों ने फौज पे हमला बोल दिया। इस युघ म भाई बचित्र सिह का भाई उधे सिह राजा केसरी चाँद का सर काट कर बरषे पे टांग कर ले आया तथा पहाड़ी राजाँओं को हार हुई।

साहिब श्री गुरु गोबिद सिह जी ने नदौण को जंग भी को, यहाँ गुरु जी राजा भीम चन्द को बिनती पे सहायता के लिए गऐ थे। इस जंग म गुरु जी के सिखों, दीवान धरम चन्द, भाई मनीराम, मूल चन्द तथा सोहन चन्द आदि जोधाओं ने तीरों को ऐसी बषा को कि अलफ खानी, लवपुरी को फौज के पांव ऊखड गऐ। उस जंग म दोनों तरफ

से बहुत नुख्सान हुआ। गुरु जी के सिख भाई सोहन चन्द तथा मूल चन्द आदि साहव माथे जूझ कर मरे। भाट वही मुल्तानी सिन्धी खाता पंवार बनजरोंतों का म लिखा है," सोहन चन्द बेटा माई दास का पोता बल्लू का ...पवार साल सतरं सै सेतालीस चेत परविष्टे बाइस गुरुवार के दिहों गुरु का बचन पाऐ नदोण के मल्हान सामे माथे जूझ कर मरा। गेलों मूल चन्द बेटा रघुपत राय का निझर गोत्तर कम्बोज वासी खेमकरण पगना कसूर जमू का मरा। (पन्ना ७६ गुरु डे शेर) इस जंग के बाद श्री गुरु गोबिद सिह जी ने समंत सतरं सै अठतालीस विसाख के दिहों मनीराम को दीवान कि उच्च पदवी दे कर निवाजा। शहीद बिलास सेवा सिह म लिखा है," मनीऐ पे गुर किपा होई सिद्को सिख इस सम नहों कोई दिवस ब्सोआ संगत बीच. गुरु दीवान मनीऐ को कोच १६५१.जेठ सुधि १७५५ वि: को दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिद सिह जी ने मनी सिह को हरिमंदिर साहिब अमृतसर का गन्थों थाप कर पाँच सिखों के साथ गुरु के चक (अमृतसर) भेजा।

भाई मनी सिह के ११ भाई ८ पुत्र १० पोतरे गुरु साहिब कि धम जंगों म शहीद हुऐ। अगर भाई मनी सिह के दादा उन के भाई, ताऊ, चाचा तथा उन को औलाद, जो गुरु जी को धम जंगों म शहीद हुऐ को गिनती को जाऐ तो इन को संखिया ५२ हो जाती है। साहिब श्री गुरु गोबिद सिह जी ने नांदेड म माधो दास को अपना शिष्य बना कर अमृतपान कराया तथा उन को भाई गुरबक्श सिह का नाम दे कर दुष्टों का दमन करने हेतू पंजाब भेजा, जिसे खूब बहादरी दिखाने का कारण लोगों ने बन्दा बहादर का ख़िताब दिया तथा यही उस का नाम पड़ गया ..." बन्दा सिह बहादर " भाव गुरु जी का शेर को तरहां बहादुर मानव. जब साहिब श्री गुरु गोबिद सिह जी ने नांदेड से बाबा बन्दा सिह बहादर को पंजाब भेजते समय उन के साथ पाँच सिख भाई भगवान सिह, कोएर सिह, बाज सिह , बिनोद सिह तथा कान सिह भेजे। इन म से भाई भगवान सिह, कोएर सिह, बाज सिह भाई मनी सिह के चाचा नठीये के पुत्र थे। सर्राहद फते के बाद बाबा बन्दा सिह बहादर ने बाज सिह को उनको कब्लिअत को धयान म रखते हुए सर्राहद का गवनर थापा। इन तीनो योधाओं ने अपने अन्तम समय तक बाबा बन्दा सिह बहादर का साथ नहों छोड़ा और उस के साथ ही बंदी बन्ने के बाद दिल्ली म शहीद हुए । भाट वही भादसों, पगना थानेसर म लिखा है, " भगवान सिह बेटा नठिया का,कोएर सिह बेटा नठिया का, बाज सिह बेटा नठिया का शाम सिह बेटा नठिया का पोत्रा बल्लू राव पडपोत्रा नाइक मूल चन्द के चन्दरबंसी, भादावाजी, गोतरे पवार, बन्स बिन्झे का बन्झावत जलाना समंत १७७३ असाड मासे सुदी ऐकम के दिवस सवा पहर दिन चड़े बखितिअर काको के मकबरे पास जमुना नदी किनारे बाबा बन्दा सिह बहादर के साथ शाहादत पाऐ गऐ।(गुरु कोआँ साखीआँ पन्ना १९९

देसा सिह भाट को टोली १७०६ इ: म अमृतसर पहांच कर भाई मनीसिह के पोते भागु को बधाई के सम्य बाबा बचितर सिह को ऊसतती करते हुए यह दोहे का बीर रसी शैली म गायन किया :-

ज्लाहने पवार बांके अली पुर के बंज्रोंत, तोहं से कोन लडे।
जस्वारी राम का मारिया केसरी हठी गेल लडे ।
बचितर सिह तेरी बरषी रोशन , तेरी सांग झमल करे।
तेरे नाम थी रिपु थर थर कांपे , तेरी पबती झलक परे।
धन माता सीतो बाई तेरे पांच सपूत रण लड़ मरे ।

जहाँ शहीद भाई मनीसिह के परिवार ने जंगों म शाहीदों दों वहाँ भाई मनी सिह ने गंभीर संकट के समय हरिमंदिर साहिब को सेवा को और संगतों को गुरु ग्रंथ साहिब को कथा सुनाते रहे और सिख कौम को रहनुमाई करते रहे। अपनी उतम सूझ बुझ से सिख कौंम म ऐकता बनाई रखी और बंदई खालसा तथा ततिव खालसा का फैसला गुरु किरुपा से किया।जहाँ भाई मनी सिह को साहिब गुरु गोबिद सिह जी के ५२कवीओं म शामल होने का तथा श्री ग्रन्थ साहिब जी को बीड़ लिखने का गुरु घर से संमान प्राप्त है। वहों भाई मनी सिह जी एक सनिमर सिख को तरहं हर सम्य सेवा म रहे आप ने गुरु क्रपा को मानते हुऐ असाड़ सुदी पंचमी १७९१ बि: को लाहोर म जाबर मुग़ल बादशाह के हुकम से बन्द बन्द कटवा कर शहीदी प्रापित को मगर किसी भी डर, लालच व् उच्च पद्द को नकारते हुए अपने सिख धम पर अंतिम साँस तक डटे रहे। भाट वही मुल्तानी सिन्धी म लिखा है ,"मनी सिह बेटा माई दास का पोता बल्लू का परपोता मुले का शाही हुकम गेल सन्मत सत्रां सौ इकान्मे आसाड़ सुदी पंचमी लाहौर के मल्हान छे घडी दिहो

चडे बन्द बन्द काट भूँ काट आया, गेले जगत सिह बेटा माई दास का, चित्र सिह बेटा मनी सिह, गुरबक्श सिह बेटा मनी सिह का मारे गऐ। (पन्ना २१ गुरु कोअन साखीआं)

इतना ही नहों श्री गुरु गोबिद सिह जी को जंगों म पहिली बीबी शहीदी पाने वाली भी इस गोआर राजपूत समाज से थी जिस का नाम बीबी भिखां पुत्री बजर सिह राठोर पोती रामे को परपोती सुखिया मांडन को तथा पत्नी भाई आलम सिह नचना सपुत्र दुगा दास , पोता भाई पदमां परपोता कॉल दास चौहान सी इथे यह बताना जरूरी है क़ि शहीद भाई मनी सिह क़ि भुआ बीबी मलूको पुत्री शहीद भाई बल्लू सुखिया मांडन के साथ विवाहित थी जिनका जीकर दंदीवाल चौहानों के अनुसार बीबी माई भागो है बीबी भिखां क़ि शहीदी के बारे भट्ट वही मोहरां वाली म पन्ना ९२ पे एसे लिखा है ," सुरिया वंशी गोतम गोतरे राठोर उदाने ,जीताने गाँव लादवां परगना थानेशर गाँव सोधरा परगना वजीरा बाद ..... भिखां बेटी बजर सिह पोती रामे को पोख मासे दिन सात समन्त सत्रां सै बास्ट नंगल गुजरांके मल्हान एक घरी चरे रन म जूझ कर मरी (गुरु के शेर पन्ना १३० डाक्टर हर्राजदर सिह दलगीर)

राजपूतों के दुसरे गोत्रों से जो शहीद हुए ह, ऊन को सूची देने से यह ऑर भी लम्बी हो जायगी. हम दो तीन नाम इस लिए दे रहे ह को पाठक जान सक कि बॉझे के बिजरावत गोत्र बिना दुसरे गोत्रों से भी सिख जंग म शहीदी दी :-

१. केसर सिह बेटा छबील सिह का पोता चंदर राय का नम्सोथ
भूजाना शहीदी (८. १०. १७००)

२. सुखिया मांडन राठोर (शनिद भाई मनी सिह का फूफा)
शहीदी (१६. १२. १६३४)

३, देवा सिह बेटा तेगा पोता सुखिया
शहीदी (८.१०.१७००)

४. उदय सिह (२४. ६.१६३४), बजर सिह (१३. ०५. १७१०), जीता सिह (१४. ०४.१७१०) नेता सिह (१४. ०४ .१७१०) बेटे रामे के पोते सुखिया मांडन बीबी भिखां पुत्री बजर सिह पोती रामे कि परपोती सुखिया मांडन पत्नी शहीद भाई आलम सिह नचना शहीदी (६. १२. १७०५)

1. भाई नानू पुत्र मूले राऊ का पोता
३, ओक्टुबर १६२१ शहीदी रूहेला (हरगोबिन्द पुर)

२. भाई बलू पुत्र मूले का राऊ का पोता
१५, अप्रैल १६३५ शहीदी अमृतसर

३. भाई सुहेला पुत्र बलू का मूले का पोता
२९, अप्रैल १६३५ शहीदी फगवारा

४. भाई दासा पुत्र बलू का मूले का पोता
२९, अप्रैल १६३५ शहीदी फगवारा

५. भाई दयाल दास पुत्र मई दास का पोता बलू का
११, नवम्बर १६७५ शहीदी चांदनी चोक

६. भाई हठी चंद पुत्र मई दास का पोता बलू का
१८ सितम्बर १६८८ शहीदी भंगानी

७. भाई सोहन चंद पुत्र मई दास का पोता बलू का
२० माच १६९१ शहीदी नदौन

८. भाई लहणु पुत्र मई दास का पोता बलू का
२० फरबरी १६९६ शहीदी गुलेर

९. भाई कलिआन सिह पुत्र दयाल दास का पोता माई दास का
२९ अगस्त १७०० शहीदीतर गढ़ (आन्नद पुर सैय ५ किलोमीटर)

१०. भाई भगवान सिह पुत्र मनी सिह का पोता माई दास का
३०, अगस्त १७०० शहीदी किला फ़तेह गढ़ (उदय गाँव साहोटा को हदूद)

११. भाई नन्द सिह पुत्र आलिम सिह पोता दरिया का पोत्ता मूले का
३०, अगस्त १७०० शहीदी किला फ़तेह गढ़ (उदय गाँव साहोटा को हदूद)

१२. भाई बाघ सिह पुत्र राय सिह पोता माई दास
३१, अगस्त १७०० शहीदी किला आलम गढ़
१३. भाई आलम सिह पुत्र दरिया पोता मूले का
१, सितंबर १७०० शहीदी किला लोहगढ़
१४. भाई सुखा सिह पुत्र राय सिह पोता माई दास
१, सितम्बर १७०० शहीदी किला लोहगढ़
१५. भाई मथुरा सिह पुत्र दयाल दास का पोता माई दास का
८, अत्तूबर १७०० शहीदी किला निर्माहि गढ़
१६. भाई गोकल सिह पुत्र दरिया पोता मूले का
१३, अत्तूबर १७०० शहीदी किला निर्माहि गढ़
१७. भाई जीवन सिह पुत्र दरिया पोता मूले का
२०, अत्तूबर १७०० शहीदी कम्लोट
१८. भाई उदय सिह पुत्र मनी सिह का पोता माई दास का
६, दिसम्बर १७०५ शहीदी शाही टिबी
१९. भाई बचितर सिह पुत्र मनी सिह का पोता माई दास का
८, दिसम्बर १७०५ शहीदी, 'मलकपुर रंगड़ां शहीदी, 'मलकपुर रंगड़ां ' म
जख्मी हुए ६, दसंबर १७०५ कोटला निहंग म प्राण दिय *****
२०. भाई अनक सिह पुत्र मनी सिह का पोता माई दास का
७, दिसम्बर १७०५ शहीदी चमकोर
२१. भाई अजब सिह पुत्र मनी सिह का पोता माई दास का
७, दिसम्बर १७०५ शहीदी चमकोर
२२. भाई अजायब सिह पुत्र मनी सिह का पोता माई दास का
७, दिसम्बर १७०५ शहीदी चमकोर
२३. भाई दान सिह पुत्र माई दास पोता बल्लू का
७, दिसम्बर १७०५ शहीदी चमकोर
२४. भाई संत सिह बंगेसरी पुत्र नठिया का पोता बल्लू का
८, दिसम्बर १७०५ शहीदी चमकोर
२५. भाई राय सिह मुल्तानी पुत्र मई दास का पोता बल्लू का
२९, दिसम्बर १७०५ शहीदी मुकतसर
२६. भाई महां सिह पुत्र राय सिह का पोता मई दास का
२९, दिसम्बर १७०५ शहीदी मुकतसर
२७. भाई सीतल सिह पुत्र राय सिह का पोता मई दास का
२९, दिसम्बर १७०५ शहीदी मुकतसर
२८.भाई मान सिह निसांची पुत्र मई दास का पोता बल्लू का
३, अप्रैल १७०८ शहीदी चितोर गढ़
२९. भाई संग्राम सिह पुत्र बचितर सिह,पोता मणि सिह का
१२, मई १७१० शहीदी चपर चिड़ी
३०. भाई महबूब सिह पुत्र उदय सिह,पोता मणि सिह का
१२, मई १७१० शहीदी चपर चिड़ी
३१. भाई फ़तेह सिह पुत्र उदय सिह,पोता मणि सिह का
13, मई १७१० शहीदी चपर चिड़ी
३२. भाई सुखा सिह पुत्र नठिया का पोता बल्लू का
२०, नवम्बर १७१६ शहीदी सरहंद आलोवाल के शहीद
३३. भाई जेठा सिह पुत्र माई दास पोता बल्लू राय
११, अक्टूबर १७११ शहीदी आलोवाल
३४. भाई हरी सिह पुत्र जेठा सिह पोता माई दास
११, अक्टूबर १७११ शहीदी आलोवाल
३५. भाई रूप सिह पुत्र माई दास पोता बल्लू राय
११, अक्टूबर १७११ शहीदी आलोवाल
३६, भाई केशो सिह पुत्र चित्र सिह पोता मनी सिह
२८, दसम्बर१७११ शहीदी बिलासपुर

३७. भाई बाघ सिह पुत्र उदय सिह पोता मनी सिह
२८, दस म्बर१७११ शहीदी बिलासपुर
३८. भाई मोहर सिह पुत्र उदय सिह पोता मनी सिह
२२,जून १७१३ शहीदी स्डोरा
३९. भाई सैणा सिह पुत्र चित्र सिह पोता मनी सिह
२२,जून १७१३ शहीदी स्डोरा
४०. भाई अल्बेल सिह पुत्र उदय सिह पोता मनी सिह
२२,जून १७१३ शहीदी स्डोरा बाबा बन्दा सिह बहादर के साथ शहीद
४१. भाई भगवंत सिह बंगेसरी पुत्र नठिय का पोता बल्लू राय
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली
४२. भाई बाज सिह बंगेसरी पुत्र नठिय का पोता बल्लू राय
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली
४३. भाई कोइअर सिह बंगेसरी पुत्र नठिय का पोता बल्लू राय
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली
४४. भाई शाम सिह बंगेसरी पुत्र नठिय का पोता बल्लू राय
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली
४५. भाई नाहार सिह पुत्र बाज सिह पोता नठिय का
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली
४६. भाई शेर सिह पुत्र बाज सिह पोता नठिय का
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली
४७. भाई अल्बेल सिह पुत्र बाज सिह पोता नठिय का
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली
४८. भाई राम सिह पुत्र चित्र सिह पोता मनी सिह
९, जून १७१६ शहीदी कुत्बिमनार दिल्ली मनी सिह के साथ शहीद
४९. भाई मनी सिह बेटा माई दास पोता बल्लू का
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर
५०. भाई गुलजार सिह बेटा आलम सिह पोता दरिया
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर
५१. भाई रण बेटा नठिया का पोता बल्लू का
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर
५२. भाई संगत बेटा नठिया का पोता बल्लू का
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर
५३. भाई जगत बेटा माई दास का पोता बल्लू का
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर
५४. भाई चित्र सिह बेटा मनी सिह का पोता माई दास का
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर
५५. भाई गुरबख्श सिह बेटा मनी सिह का पोता माई दास का
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर
५६. भाई भूपत सिह बेटा जेठा सिह का पोता माई दास का
२४ जून १७३४, शहीदी लाहोर

यहाँ पर यह बताना भी जरूरी है, कि जिन बीबीओं का जिक्र हम हर रोज अरदास म करते ह, वो कोई और नहों वो सभी शहीद भाई मनीसिह के परिवार से ही थों, जिन्हों ने माता सीतो जी (बसंत कौर) को अगुआई म अपने बचों के टोटे करवा करवा कर तक अपनी झोलिओं म डलवाऐ मगर सिखी सिदक ना छोडा और सिखी सिदक निभाते शहीदीआं दों।मुग़ल हकूमत के खूंखार दरिन्दे इन सिदको माताओं को लोभ लालच दे कर गुमराह ना कर सके. गोआर राजपूतों का सिखी से सम्बंध का कहाँ तक वणन कर।मुझे कोई समय नजर नहों आता जहाँ गोआर राजपूत गुरु घर को तथा गुरु जी को सेवा म पीछे रहे हों।चमकोर को गढी म साहिब श्री गुरु गोबंद सिह जी ने भाई संगत सिह बंगेसरी को अपनी कलंगी पहना कर सिख कौम को रहनुमाई को काची गढ़ी म तैनात किया था, व मुकतसर को जंग म गुरु जी के साथ अपने टूटे सम्बंध जोडने वाला शहीद भाई महां सिह भी शहीद भाई बल्लू राऐ के परिवार से थे। अगर हम दंदी वाल चौहानों का इतिहास, नेता सिह भटिडा, पे विश्वास कर तो मशहूर सिख जरनैल

बीबी माई भागो ही माई मलूको थी, जो शहीद भाई मनी सिह को फूफो (पिता कि बहन) थी। इस तरहां गुरु को साखिआं, सम्पादित प्रो:पिआरा सिह, गुरु के शेर, गुरबक्स सिह को लिखी, शहीद बिलास भाई मनीसिह सम्पादित गियानी गरजा सिह व शरोमनी शहीद गुरचरण सिह औलाख तथा डाक्टर हर्जिदर सिह दिलगीर को लिखी भाई मनी सिह ते उन्हां दा परिवार आदी लिखतों का अधियन करने से पता चलता है सिख इतिहास गोआर राजपूतों को कुरबानीओं से भरा पङा है। प्रशन उठता है कि किया भाई बचितर सिह जी का परिवार और दुसरे शहीद गोआर राजपूत थे? पृथ्वी राज चोहान के दरबारी कवी चाँद बरदाई ने अपनी पुस्तक 'पृथ्वी राज रासो' म और अंग्रेज इतिहासकार कनल टाड ने 'राजपूत कबीलों का इतिहास' गिआनी गरजा सिह को सम्पादत पुस्तक 'शहीद बिलास भाई मनी सिह', प्रो. पिआरा सिह पदम् को सम्पादत 'गुरु दोंआं साखिआं' म तथा गुरचरण सिह औलाख को 'शिरोमनी शहीद' म भट्ट वहिओं के हवाले दीऐ ह, इन हवालों म भाई मनी सिह के परिवार को पंवार बंस बिन्झे का बंजरावत और भाई लखी शाह बरतिया गोत्र से था बरतिया, बंजावत / बंजओंत, बिन्ज्लोंत, नर्सात, भूकिया आदि गोत्र गोआर समाज म ह। इस लिऐ सभी शहीद गोआर राजपूत ही ह। अफ़सोस इतनी कुबानीओं के होते हुऐ भी न तो गोआर राजपूत / बंजारा समाज ने आपने पूवजों कि कुबानीओं का मोल डाला और न ही सिख कौंम ने। शहीद भाई मनी सिह का शहीदी दिवस सिख कौंम ने कयू नहों मन्ताया? गोआर राजपूतों को आपने पुरखों कि याद कयू नहों ? शिरोमणी गुरुदवारा पबधको कमेटी को भी चाहीऐ के इतने अमीर विरसे के मालक इन गोआर राजपूत बंजारों को इनके बारे जानकारी देकर सिखी के साथ जोड़ हम इसी समाज के ह इस लिए कुछ रौशनी पैदा करने को कौशिश करते ह ताकि अपने नौनिहालों के लिए कुछ कर सकूं जो आने वाली पिडीयों के लिए संजोऐ मगर जरूरत तो कार्फिला बनाने को है जैसे गुरु जी के संग रहते हमारे पूरवजों ने बनाया था।

-000-

शहीद भाई बचितर सिह

शहीद भाई बचितर सिह का जनम १५विसाख १७२०को शहीद भाई मनीसिह जी के घर माता सीतो बाई के उदर से हुआ! शहीदी आप को विरासत म मिली है आप के परदादा शहीद भाई बल्लू राव जी ने ९४ साल को उम्र म अमृतसर को लड़ाई म मुग़ल जरनैल मुत्वजा खान को मर कर १६३४ म शहीदी प्रपित को इसके बारे म भाट वही कर्सिदु परगना सफोदों म लिखा है " बल्लू बेटा मुले का पोता राओ का पडपोता चाह्ड का चन्दर बंसी भाद्वाजी गोतर पवार बन्स बिन्झे का बंज्रावत रंदोंत जलाना, साल सोलां सो इकानवे वैसाख परविष्टे सत्रैं सोमवार के दिन गुरुचक के मल्हान परगणा निझाला , गुरु का बचन पाय साहव माथे रण म मुत्वजा खान को मार कर मरा। साथ कोरत बेटा भिखे का पोता रैएअ का परपोता नरसी का बन्स भागीरथ का कोशिश गोत्र गॉड ब्राहमण मारा गया"।

शहीद भाई बचितर सिह के पिता जी बारां भाई थे जिन म से एक को षोड कर बाको सारे के सारे गुरु घर को सेवा करते शहीद हुए भाई दयाला जी को बडे दैज्के म ऊबाल कर शहीद किया गया। शहीद भाई बचितर सिह अपने चार भाईओं (भाई अजब सिह, भाई अजैब सिह, भाई अनिक सिह तथा भाई उधे सिह) के साथ श्री गुरु गोबिद सिह के चरणों म हाजर हुए १७५६ म अमृतपान करके सिह सजे तथा सदेव गुरु जी को सेवा म रहे ! इन को हिमत और लगन को देखते श्री गुरु गोबिद सिह जी ने इन सभी को अपनी निजी सुरक्षा म रखा। भाई बचित्तर सिह तथा उनके भाईओं का गुरु जी को अपण करने के बारे भाई काहन सिह नाभा महान कोष म लिखता है :- "भाई मनीराम जिलाः मुल्तान के गाँव अल्लीपुरा का वसनीक राजपूत था जिसने अपने पाँच पुत्तर श्री गुरु गोबिद सिह को अपण किए कलगीधर महाराज जी ने विसाख समन्त १७५६ को अमृत शका कर इनहे सिह सजाया यह पाँचों वीर (भाई उधे सिह, भाई अजब सिह, भाई अजैब सिह, भाई अनिक सिह तथा भाई बचितर सिह) सदा कलगीधर महांराज को सेवा म रहे " (भाई काहन सिह नाभा महान कोष पन्ना ९५१) पहाड़ी राजों के साथ लडाई समय पहाड़ी राजाओं ने हाथी को लोहे को तविओं से सजआया ओर हाथी के सर पर भी लोहे को तवी

बांधी ओर हाथी को मदुरा पिला कर किले का कपाड तोडने को भेजा। जब इस को खबर भेदी ने श्री गुरु गोबिद सिह को दी तो गुरु जी ने दुनी चाँद को ओर इशारा करके कहा हमारा जह हाथी उस हाथी का मुकाबला करेगा। दुनी चाँद बहोत घबराया और रात्रि को ही दीवार फांद कर अपने साथीओं के साथ भाग गय जब इस को खबर श्री गुरु गोबिद सिह जी को लगी तो गुरु जी ने कहा कोई बात नहों गुरु जी ने भाई बचित्र सिह को ओर इशारा करके कहा अब हमारा शेर मस्त हाथी का मुकाबला करेगा जब भाई बचित्र सिह को इस बात का पता चला तो वो बहुत खुश हुए इस को सतगुर को मेहर समज कर झट तिआर होगए श्री गुरु गोबिद सिह जी ने अपने हाथों से भाई बचित्र सिह को जंगी साजो समान से विभूषित किया ओर अपने हाथ से भाई बचित्र सिह को नागनी बरषा दिया। भाई बचित्र सिह गुरु जी का आशीवाद ले कर सिघों का साथ जंगे मदान को ओर झपटे अपना बचाव करते हुए बचित्र सिह ने हाथी के सर पर नागनी से ऐसा जोरदार वार किया कि बरषा लोहे को तवीओ को चीरता हुइअ हाथी के सर म गहरा धस गिया हाथी पीड़ा न सहारता हुआ पीछे को ओर अपनी फोज को ही रौंध्ते हुए भागा ओर साथ ही सिघों ने फोज पे हमला बोल दिया। इस यध म भाई बचित्र सिह का भाई उधे सिह राजा केसरी चाँद का सर काट कर बरषे पे टांग कर ले आया तथा पहाड़ी राजों को हार हुई।

श्री आनदपुर साहिब को आखरी लड़ाई म जब मुग़ल फोज तथा पहाड़ी राजों को समिलत फोज को श्री गुरु गोबिद सिह जी के विरुद कोई सफलता नजर नहों आई तो चालाको का सहारा लेते हुए पहाड़ी राजों ने आटे को गाय को मूति बना कर कसम खाई तथा मुगलों ने कुरान शरीफ को कसम खाई तथा कहा अगर गुरु जी आनदपुर का किला छोड़ द तो उन का पीछा नहों किया जाएगा गुरु गोबिद सिह ने सिखों को समझाने के लिए खचर के ऊपर पुराने कपडे भर के किले से बहार भेजा अबी खचर थोड़ी दूर ही गई थी मुग़ल सिपहिओं ने उस को लुट लिया मगर फिर भी गुरु जी ने सिघों को बात मानते हुए आनद पुर का किला छोड़ दिया अभी सभ सरसा नदी के पास पहुंचे ही थे मुग़ल फोज ने पीछे से हल्ला बोल दिया श्री गुरु गोबिद सिह जी ने भाई उधे सिह को पचास सिह दे कर शाही टिब्बी पे दुश्मन का सामना करने का हुकम दिया भाई बचितर सिह को सो सिह दे कर रोपड़ को ओर से आ रही मुग़ल फोज को रोकने का हुकम दिया तां के जा रही सिख वहीर सरसा नदी पार कर सक हुकम मिलते ही भाई बचितर सिह सरसा नदी से रोपड़ को ओर चल दिए ओर उन को मलिक पुर रंगडों के मेदन म सरहंदी फोज के साथ भिन्दत हो गई बचितर सिह के सारे साथी एक एक कर शहीद हो गए ओर भाई बचितर सिह सखत जखमों हो कर धरती पर गिर पड़ा ओर हालत उस के काबू से बहार हो गए तबी पीछे से आते हुए साहिबजादा अजित सिह, मदन सिह अदि वहाँ पहुंच गए उन्हों ने भाई बचितर सिह को उठा कर कोटला निहंग खां म ले आए जहाँ पर पहले से ही गुरु जी पहुंच चुके थे बचितर सिह ने गुरु जी को माथा टेका भाई बचितर सिह के जखम गहरे होने का कारण गुरु ने बचितर सिह को कोठरी म लिटा दिया ओर आगे चल दिए दो दिन पीछे जख्मों का दद नां सहारते हुए भाई बचितर सिह गुरु चरणों म जा समाए भट वही तलओंदा जोंद म जह घटना ऐसे दज है।

" भाई बचितर सिह बेटा मनी सिह पोता माई दास का पडपोता बल्लू का चंदर बंसी भरद्वाजी गोत्र पवार बन्स बिन्झे का बंज्रोंत जलाना , गुरु का हुकम पाये सम्बत १७६२ पोख मासे सुदी दूज को मलिक पुर रंगडों के हाथ से घाएल होए पोख मासे सुदी चोथ शुकवार के दिन डेड पहर रात्रि गए कोटला निहंग म स्वास पूरे हुए सुदागर को पत गुरु राखी इसको बेटी का सत रहा. (गुरु को सखियन पना१५८) देसा सिह भाट को टोली १७०६ इ: म अमृतसर पहोंच कर भाई मनी सिह के पोते भागु को बधाई के समय बाबा बचितर सिह को उसतत म यह दोहा कहा:- ज्लाहने पवार बांके अली पुर के बंज्रोंत, तोहं से कोन लडे, जस्वारी राम का मारिया केसरी हठी गेल लडे, बचितर सिह तेरी बरषी रोशन, तेरी सांग झमल करे, तेरे नाम थी रिपु थर थर कांपे, तेरी पबती हलक परे, धन माता सीतो बाई तेरे पांच सपूत रण लड़ मरे! प्रशन उठता है कि किया भाई बचितर सिह जी और उस का परिवार गोआर राजपूत थे? पृथ्वी राज चोहान के दरबारी कवी चाँद बरदाई ने अपनी पुस्तक 'पृथ्वी राज रासो' और अंग्रेज इतिहासकार कनल टाड ने भी 'राजपूत कबीलों का इतिहास', गिआनी गरजा सिह दवारा सम्पादत पुस्तक ' शहीद भाई मनी सिह' तथा प्रोफसर पिआरा सिह पदम् कि सम्पादत ' गुरु दोंअं साखइआ' तथा गुरचरण सिह ओलख कि 'शरोमनी शहीद' म भट्ट वहिओं के हवाले दीऐ ह, भाई मनी सिह

के परिवार को पंवार बंस बिन्झे का बंजरावत और भाई लखी शाह को यदो बंसी बरतिया लिखा है. यह सभी गोत्र गोआर / गोर समाज के ह इसी लिया भाई बचितर सिह पुत्र शहीद भाई मनी सिह पोता माई दास पडपोता शहीद भाई बल्लू जी को गोआर / गोर जाती से संबंदत लिखना सही है।

-000-

हैंड़ो संग की ओर से अंनतरराजीय 26.27 अकतुवर 2013 संगरीआ व 10-11 जनवरी 2013 को 'विशब कप' विराट नगर, नेपाल में कीये समारोह

शहीद भाई दयाला जी

पांच गुरु साहिबानो ने सिखी के पोदे को बहुत आत्मविश्वाश से पक्का किया समय को नजाकत को देखते हुए मुगलों के जुल्मों के विरोध म श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने मीरी पीरी को दो तलवार पहिनी. उन को शाही शानो शोकत मुगलों से सही ना गई जो पहले से ही सिख गुरुओ के विरोधी थे इसी लिए जहांगीर ने पांचव गुरु साहिब श्री गुरु अजन देव जी के बारे तुज्के जहागीरी म लिखा है, "बिआस दरिया के किनारे गोएनदवाल नगर म एक पीर बजुग के लिबास म अजुन नाम का हिन्दू रहता था उसने बहुत भोले भाले हिन्दुओं को त्तथा बेस्म्ज मुसलमानों को अपने धम कम का शधालू बना कर अपनी मीरी पीरी का डंका बजाय वा लोक उनको गुरु कहने लगे. इथर उधर के अंजान ओर ढॉग के पुजारी लोक आ कर उस के पर अटूट विश्वाश जाहिर करते थे.तीन चार पुस्तों से उन को दुकान चल रही थी, बहुत समय से मेरे दिल म ये ख्याल आ रहा था कि इस झूठ को दुकान को बंद कर दिया जाए ओर ऊस को (गुरु अजन) इस्लाम म ले आए. इन्ही दिनों म खुसरो वहां से गुजरा ऊस जाहल ओर हकोर आदमों ने यह सोचा के ऊस (गुरु अजन) आदमी को मिला जाऐ और वे गुरु के डेरे म रुका और गुरु को मिला पहले सोची हुइ बात कों ओर ऊँगली से खुसरो के माथे पे (तिलक) टीका कोय जिस को हिन्दू एक अच्छा शगुन मानते ह जब यह बात मुझे पता चली म पहले ही एस झूठ के आडम्बर से परिचित था, मने हुकम दीया को ऊस (गुरु) को हाजर किया जाए. ऊस का घर घाट ओर बच्चे मुरत्व्जा खान के हवाले कोए जाएं और ऊस का मॉल असबाब जब्त कर लिया जाए. मने हुकम दीया ऊस को कशट दे कर मार मुका दीया जाए" (पन्ना १२ 'शरोमानी शहीद')

साहिब श्री गुरु अजुन देव जी को शहीदी के बाद छठे गुरु साहिब श्री गुरु हरगोबिन्द जी ने "भय काहो को देत हे, ना भय मानत आन..." को रीत चलाई और सिख संगत को जुलम के विरोध म एकत्र किया! एस लामबंदी म गोआर राजपूतों ने भी बड़ चढ़कर हिसा लिया भाई मनी सिह शहीद के दादा बल्लू राय, जो हर समय छठे पातशाह श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी को सेवा म रहे! मुगलों को ओर से १६९१ बिक्रमी को जब गुरु साहिब पे हमला किया गया तो बल्लू राय जी ने, जिन को ऊस समय ७४ वष को उम्र थी,

ने खूब जोहर दिखाए ओर मुग़ल जनल मुतवाजा खान को सीधी लड़ाई म मार कर शहीदी प्राप्त को इस शहीदी के बारे म भट्ट वहीँ म लिखा ह "बलु मूले का पोता, राव का परपोता चाह्ढ का चंद्रवंशी गोत्र पंवार तिथी बसाख परविष्टे १७ संबत १६९१ बि: को गुरु चक्क के महलान गुरु के हुकम गेल साम माथे मुरत्व्जा खां को मार कर जूझा..."

गुरु हरगोबिन्द जी के बाद नॉव गुरु तेग बहादर जी के समय तक भले कोई जंग नहों हुई, मगर मुग़ल फोज को नीती गुरु घर के विरोध म ही रही. मुग़ल बादशाह ओरंगजेब के समय भी यही नीती सिखर पर थी, और ओरंगजेब ने गुरु हर राय साहिब को दिली बुलाया ओर गुरु हर राय साहिब ने अपने साहिबजादे राम राय जी को दिली भेजा. साहिबजादा राम राय ओरंगजेब के असर म आ गया ओर गुरु आशे (इछा) पे पूरा ना उतरा.जब आठव गुरु हरिक्रिशन साहिब जी गुर गद्दी पे बिराजमान हुए तो उनको भी ओरंगजेब ने दिली बुलाया.उस समय गुरु घर के सेवक गोआर राजपूत गुरु जी संग दिली गए और गुरु जी को सेवा म रह. आठव गुरु साहिब श्री हरिक्रिशन जी के जोती जोत समाने के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी गुरु गद्दी पे बिराजमान हुए।

भाई दयाला जी माई दास जी के १२ पुत्रों म से दुसरे नम्बर पे थे. भाई मनी राम,जो अमृत को दात प्रपित करने के बाद भाई मनी सिह के नाम से प्रसिद्ध हुए, भाई दयाला जी से उम्र म छोटे थे. जब १६५७ ईसवी म माई दास सातव गुरु साहिब श्री हरि राय जी के दशनों को आऐ तो माई दास ने भाई दयाला जी को गुरु चरणों म ही अपण कर दिया। इस तरह भाई दयाला जी को सातव, आठव तथा नोव गुरु साहिब को सेवा करने का श्रेह मिला भाई दयाला जी को सेवा ओर गुरु घर के लिया निष्टा के कारन हों श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई दयाला जी को 'दीवान' बनाया, कई हुकमनावे जारी कोए- "भाई दयाल दास गुरु का बेटा है ओर पटने को सन्गत को लिखा, भाई दयाल दास कहे, सन्गत गुरु का हुकम कर मानना, सन्गत के मनोरथ गुरु पूरे करेगा..." बनारस को सन्गत को लिखे हुकाम्नावों म भाई दयाल दास का नाम भी आता है जेसे "...सरबत सन्गत बनारस को गुरु गुरु जपणा, जनम सौवरे सन्गत के मनोरथ गुरु पूरे करेगा, कार सन्गत को एक सो छिहासट रूपे सन्गत ने भाई दयाल दास पास भेजे सो हजूर आए सन्गत को बोह्ड़ी होई आगे कार भेट मनत सभ भाई दयाल दास को सन्गत ने लोच कार देना सन्गत का रिजक वधेगा मनोरथ गुरु पूरे करेगा ..." (पन्ना ९९ हुकमनावे गंडा सिह)

श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई दयाल दास को 'मसंद' भी थापा जो उगराही करते और गुरु को गोलक म पैसे जमां करते! जब गुरु तेग बहादर जी को धम्धान परगना बांगर से आलम खां रूहेला ने शाही हुकम से बंदी बना दिली ले आया उस समय दीवान मतीदास साथ थे! गुरु किया साखियन म पन्ना ७४ पे लिखा है "गुरु तेग बहादर जी महल नांवा को गाम धम्धान परगना बांगर से आलम खां रूहेला शाही हुकम से दिली को ले कर आया. साल सतर सो बाइस कतक मासे शुक्ल पखे गिअरंस को साथ दीवान मतीदास, सतीदास आऐ...गुरदास अयिया बेटा कोरत बरतिया का...जेठा,दयाल दास आऐ बेटे माईदास जल्हाने बंस बिन्झे का बंजरावत तथा और सिख फकोर आऐ." (भट्ट वही यादेव बंसियन को खाता बंज्रावतों का)

बादशाह ने गुरु जी को कतल करने का हुकम दिय. कँवर राम सिह कशुहरा ने रोका.बादशाह ने कँवर राम सिह को तरफ देखा और कहा, इन्ह इनको मिसल म, सतगुर को मति दास आदी साथीओं संग नजरबन्द किया जाय.गुरु जी का बंदिवान होना सुन कर दीवान दरगह मल ओर चोपतराय आदी दिल्ली म रसीना नगरी आऐ.रानी पुष्पा देवी ने इन के आने पे बहुत सतिकार किया, रहने को एकांत स्थान दिया दरगह मळ ने रानी से पूछा कि गुरु जी का क्या हाल है. रानी ने पहिले इन्ह धीरज दिया और कहा गुरु जी जल्दी ही बंदिखाने से बाहर आ जाएंगे “सम्नत सत्रां सौ बाईस क्रिष्णा पखे पोख मास को पंचमी को गुरु जी दो मास तीन दिहों बंदिखाने रहने के बाद बंदिखाने से बाहर रानी पुष्पा देवी के ग्रेह आइ गऐ” (पना ७४ गुरु कों साखियन) जब गुरु तेग बहादर जी पूरब यात्रा पे गये तो घर को सारी जिमवारी भाई दयाल दास को थी.गुरु तेग बहादर साहिब को और से आऐ.हुक्मों को पालना करना भाई दयाल दास अपना दयेतव समजते ईसी लिऐ श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई दयाल दास जी को 'घरबारी दीवान' बनाया था! जब श्री गुरु तेग बहादर जी १६७३ ई: म पंजाब आए तब भाई दयाल दास भी साथ पहुंचा.श्री गुरु तेग बहादर जी कश्मीरी पंडतों को बात ओरंगजेब के साथ करने के लिया दिल्ली चले भाई दयाल दास जी,भाई मतीदास और भाई सतीदास जी गुरु जी के साथ थे.श्री गुरु तेग बहादर जी को तीन सिखों के साथ 'मलकपुर रंगड़ां ' से नूर मोहमद खान मिजा चोको

रोपड़, ने बंदी बना सर्हिद पेश किया.तीन महीने बस्सी पठाना बन्दीखाने म रखकर सम्नत १७३२ मंगसर वदी त्रोसदी वीरवार के दिन श्री गुरु तेग बहादर जी को दिल्ली आऐ.दिल्ली म श्री गुरु तेग बहादर जी को बहत कष्ट दिया गए. धम बदलने को या करामत दिखाने को कहा गया, मगर श्री गुरु तेग बहादर जी ने जालिमों को बात न मानी.तब गुरु जी को डराने के लिए शाही काजी ने हुकम किया के गुरु जी के साथ बंदी बनाये भाई दयाला जी, भाई मतीदास तथा भाई सतीदास को कष्ट दे दे कर शहीद किया जाए. गुरु कों साखियन के पना ८३ पे यूँ लिखा है- "शाही काजी ने इन तीन सिखों को फ़तवा दिया और कहा ये तीनो इस के साथी ह एस के सामने मार दिए जाऐं...अवल दयाल दास को एक उबलते पानी से भरे देगचे म बंद करके मारा जाए ..."इस तरह काजी का हुकम मानते हुऐ ज्लादौं ने दयाल दास जी को बडे देग्चे म उबलते पानी म बिठा दिया.गुरु का प्यारा अपने धम पे अडोल डटा रहा और गुरु को ही रजा मानता शहीदी प्राप्त कर गया. साफ है कि जहाँ छठे गुरु हरिगोबिद साहिब जी दवारा जुलम के खिलाफ को गई लड़ाईओं म भाई मनी सिह के दादा, चाचा, ताऊ, फूफा और फूफा के बेटों अग्रिम पंक्तिओं म लड़े और शहीद हुए वहां ओरंगजेब के जबर और जुलम के विरुद्ध भी भाई मनी सिह के बडे भाई, भाई दयाला जी ने धम पे डट कर और गुरु को रज़ा को मानते बेमिसाल शहीदी दी जिस को हम छेव गुरु जी द्वारा जुलम के खिलाफ जंगों के बाद पहिली शहीदी कहते ह. प्रशन है भाई दयाला जी परिवार गोआर राजपूत थे? पृथ्वी राज चोहान के दरबारी कवी चाँद बरदाई ने - पृथ्वी राज रासो',अंग्रेज इतिहासकार कनल टाड ने 'राजपूत कबीलों का इतिहास' गिआनी गरजा सिह-'शहीद भाई मनी सिह' तथा प्रोफसर पिआरा सिह पदम् कि-'गुरु दोंअं साखइआ', गुरचरण सिह ओलख-'शरोमनी शहीद' किताबों म भट्ट वहिओं के हवाले ह, इन म भाई मनी सिह के परिवार को पंवार बंस बिन्झे का बंजरावत और भाई लखी शाह को यदो बंसी बरतिया लिखा है.यह सभी गोत्र गोआर / गोर समाज के ह और आज भी परचलित ह इस लिया भाई दयाला जी को गोआर / गोर जाती से संबंदत लिखना सही और हकोकत बयां करने को बात है !

-000-

शहीद भाई मनी सिह

पङ्पातिर चाहर का चंदावशी शहीद भाई मनी सिह जी के परिवार को क़ुरबानीओ सी मिसाल कही और नहों मिलती! जब से गुरु साहिब को जुलम के खिलाफ समय के हुक्मरानों के साथ लड़ने का मोका मिला इस परिवार के जुझारू व् सर कलम करवाने को सदेव तयार रहने वाले योधाओं ने मैदाने जंग म सब से अग्रिम पंक्तिओं म हो कर दुश्मन के हर भारी से भारी हमले को रोका तथा दुश्मन के दन्त खट्टे किये! भाई मनी सिह जी के दादा जी भाई बल्लू राए छठे गुरु श्री गुरु हरगोबिन्द सिह जी के समय गुरु के चक म ७४ वष को आयु म वीरता के जोहर दिखाते हुए मुसलमान जरनैल मुतजा खान को मार कर शहीद हुए. उन को इस वीरता के बारे म भाट वहिओं म यु लिखा गया हे - "बल्लू बेटा मूले का पोत्र राव भरद्वाज गोत्र पुआर बन्स बीन्झे का बंज्राओत रदूत जलाहना साल सोलन से इकानवे वेसाख पविष्टि सत्रा सोमवार के दिहु गुरु चक के मल्हान परगना निझाराला गुरु के बचन पाऐ सांहवे माथे रन म मुतजा खान को मार के मरा. गेले कोरत बेटा भीखे का पोता रिया का परपोता नरसी का, बन्स भागीरथ का कोशिश गोत्र गोड़ ब्रह्मण रन म जुझमरा (पन्ना १९ गुरु कियां सखिया)

यहाँ भट वहिओं से साफ़ मालूम होता हे के शहीद भाई मनी सिह जी को जुलम से टकर लेने तथा कुबनीया देने को सीख/ गुरती अपने पूवजों से विरसे म ही मिली थी. सिख विद्वानों ने शहीद भाई मनी सिह के बन्स गोत्र के बारे अलग अलग विचार दिय ह . भले ही शहीद क़ि कोई जाती नहों होती , वो सारी कॉन्म के शहीद होते ह फिर भी अपने आप को ऊन शहीदों के साथ जोरने के लिऐ सिख विद्वानों ने ऊनको अलग अलग जाति/ बन्स से लिखा है और सिचाई को आगे नहों आने दिया किसी ने शहीद भाई मनी सिह को कम्बोज , किसी ने दूलट तो किसी ने इन को काने कछिया लिखा इस लिए इस से पहले के हम शहीद भाई मनी सिह जी के जीवन के बारे म बात आगे करे यह शंका दूर कर लेना चाहिए के अपने सरीर का पुजा पुजा कटवाने वाला यह महान शहीद भाई मनी सिह जी पुत्र भाई माईदास पुत्र बल्लू का चंदवशी भरद्वाज गोतर पुआर, बीजे का बंज्राओत भाई मनी सिह जी कम्बोज ह जेसे के भाई केसर सिह जी ने लिखा हे या फिर

भाई मनी सिह जी काने काछे के ह जेसे भाई वीर सिह बल को १८२७ म छपी रचना सिघ सागर म लिखते ह. या भाई- गियानी ज्ञान सिह अपनी किताब पंथ परकाश म भाई मनी सिह जी को दूलट जाट लिखते ह इन म से सच्च कया ह यह विचार करने तथा निरणे करने के लिए आइए देखे के शहीद भाई मनी सिह जी किस बरदारी से ह शहीद भाई मनी सिह जी कम्बोज: - गियानी गरजा सिह जी ने शहीद विलास म लिखा हे के - भाई मनी सिह जी के कम्बोज वंश म पैदा होना के बारे म भाई केसर सिह जी छिबर मानते हे और यह दावा करते ह के हम ने दशमेश जी के मामा बाबा किरपाल सिह जी के संग भाई मनी सिह कम्बोज जी के दशन किये थे. साथ ही केसर सिह छिबर मानते ह के उस समय वो ५ - ६ वष के थे. इस लिए उन को कही बात पे यकीन नहीं किया जा सकता. लगता हे के भाई केसर सिह छिब्बर जी ने भूल को हे उन्ह भोचका लगा हे इस लिए वेह भाई मनी सिह मुल्तानी, गोतर पवार को ही कम्बोज लिख गए. भाई मनी सिह दुलट :-

गियानी गरजा सिह जी के अनुसार भाई मनी सिह को दुलट लिखने वाले गियानी ज्ञान सिह जी थे जो आप भी दुलट जाट के ह प्रमाण के लिए उनोहों ने नीचे लिखे उधरान दिऐ ह :-

मनी सिह के जो थे बहादर. वह भी बसे तहां को सादर.
जिन म थे ऐक सिह निगाहिया बिदत डकैत भैओ नगाहिया
है संतत तिह थां अब ताहि भयो कवी जह जिस कुल माही
तिन के डूम साहसी भाट. जहि सुनिओ जो ठाट
मनीसिह को केहो गाथा, सुनो खालसा जी हित साथा.
बहो बिप्रन तो जहो हम्सुनी, लिखी पिखी जेतक सो गुनी.
(पंथ परकाश, दूसरी छाप लाहोरी पन्ना २७८)

इस से साफ होता है कि गियानी ज्ञान सिह जी आप भी मानते ह कि उनो ने सुनी सुनाई लिखी है. और पंडा श्री कंठ पुत्तर लक्ष्मी कान्त का , कुरुक्षयतर म दज है :- ' हमीर सिह, महाराज सिह, थाराज सिह, तारा सिह, बखता सिह, रुघा सिह , सुजान सिह न्गाहिया का बेटे कला सिह के पोते....आये दीदार सिह, सदा सिह गियान सिह, भाग सिह के बेटे, भाग सिह, बखता सिह का बेटा, न्गाहिया का पोत्ता, दीदार सिह, सदा सिह, गियान सिह, भाग सिह के बेटे आय (पन्ना १३ शहीद बिलास भाई मनी सिह) उपरोक्त बंद म गियानी ज्ञान सिह और उस के बडे बडेरों का जिक्र तो आत्ता है मगर भाई मनीसिह का किधरे जिक्र नहीं आता. एस्से लगता है गियानी ज्ञान सिह आप दुलट गोत्तर म से था, इस लिए भाई मनीसिह को अपने साथ जोड़ रहे ह. भाई केसर सिह छिबड़ के कहने पर कम्बोज और दूसरा दुलट कह रहा है. गियानी ज्ञान सिह जी ने पहली शाप म भाई मनीसिह के पिता का नाम बीका और उस से आगे न्गाहिया सिह आद पाँच पुत्तर बताये ह गियानी ज्ञान सिह ने साफ लिखा है कि यह उस ने डूमों और संसिओं से सुना था. दूसरी शाप म बिरधों के कहने पे बीका कि जगह पे काला और निगाहिया सिह का एको भाई मनी सिह बताया. इस लिए गियानी ज्ञान सिह ने भाई मनी सिह मुल्तानी कॉम पंवार को ही दुलट बना दिया जिस का कोई सबूत गियानी ज्ञान सिह के पास नहीं था |

भाई मनी सिंह काने काछीआ:- भाई मनी सिंह को काने काछा परगणा लाहौर का लिखने वाला भाई वीर सिंह बळल माझे के नगर सठिआले का रहिने वाला था। इन्हो ने 1884 (1829 ई) मैं सिघ सागर नाम की पुसतक में लिखा है:- लो कुछ के अनत्रे काना काछा गिराउँ। तहि पुर जिह भट भव लयो मनी सिंह तिह नाउँ। (अधिआऐ 21) भाई वीर सिंह बलल का कथन है कि भाई मनी सिंह ने काना काछा नगर मैं जन्म लिया, यह ठीक नहीं लगता। भाई मनी सिंह मुलतानी बन्स चन्द्रबन्सी भारद्वाजी पन्वार गोत्र, बींझे के बन्जराउँत राजपूत के दूसरे ओर तीसरे पुत्र (बचित्र सिंह, उुदे सिंह) की सन्तान काने काछे गाँव मरल भैणी आदि नगरों में आ कर अबाद हो गई। लगता है भाई वीर सिंह बलल को ईस बात का भरम हो गिया होगा कि उुस ने भाई मनी सिंह मुलतानी को ही काने काछे का वसनीक लिख गिया । ईस तराँ साफ हो जाता है कि भाई मनी सिंह ऐक ही हुआ है, जिस के पूरवज पहिले खान देस से हिमाचल प्रदेस से नाहन नगर आ टिके। सन्मत 1582 बि: (1525 ई:) राउो बेटा चाहड़ की वधाई के सम्य बींझे का खानदान नाहन में रहिता था। जो भाट वही से साफ हो जाता है:-'बघाई ली राउो की बेटा चाहड़ का पोता हाफा का पड़पोता जलला का चन्द्रबन्सी मुआने भोजाने बन्स बींझे का तिथी असाड़ सुधी ईकादसी सन्बत 1582 नाहन के मलहान देस में ऐक घोरो दान कीआ, कुलल परोहत नरसी को माना राउो के पुत्र मूले की वधाई में जो सन्मत 1600 बि: (1543 ई) को हूई से ईस प्रीवार का परगना मुलतान के गाँव अलीपुर में होने का पता चलता है।

'बघाई ली मूले की बेटा राउो का पोता चाहड़ का पड़पोता हाफा का पन्वार बन्स बींझे का बन्जराउोंत रटाउोंत जालहाना मिती सावन बदी दूज सन्बत 1600 बि: को अलीपुर के मलहान पारगना मुलतान ऐक उूठ ऐक घोरो दान कीआ, कुळल परोहत दरीआ को माना" (पन्ना 18 शहीद बिलास भाई मनी सिंह) उूपर दीऐ संकेतों से साफ हो जाता है कि बन्द

बन्द कटवाने वाला भाई मनी सिंह कोई और नहीं, जैसे अलग अलग लेखकों ने भूलेखा डालने के लिऐ कई मनी सिंह बना दिऐ। मगर भाई मनी सिंह मुलतानी बन्स पन्वार राजपूत बींझे के बन्झराउोत बेटा माई दास पोता बललू राऐ ही है, जो सदेव गुरू घर की सनेह का पात्र रहा।

भाई मनी सिंह जी को सातवें गुरू साहिब गुरू हरि राऐ जी से ले कर साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाँराज तक र्दशन ओर सेवा करने का सोभाग परापित हूआ। भाई मनी सिंह जी के वडे वडेरे भी गुरू घर की मेहर के पातर रहे हैं। भाई मनी सिंह शहीद जी के पिता , माई दास का शाहजहाँ के दरबार में अचछा रुतबा था। चोखा भाट भाई मनी सिंह जी के पिता माईदास के लिऐ लिखता है:-मईदास शाहजहाँन को मिला, वेखे हिन्दू मुसलमान।

मईदास तेरे तन्बू गैन महि झुले, डिउोड़ी बाहर खड़े दरबान।

एतना ही नहीं भाई मनी सिंह जी को भूआ, मलूकी, अकबर बादशाह को मिली, जिस ने उुस को बेटी करके सनमान दिया ओर बहुतमान दिया। जिस के लिऐ चोखा भाट ने लिखा है:-

‘ मलूकी मिली अकबर बादशाह को, जिह बेटी कहि बिठलाई।
धड़ा पन्सेरी काठ करोड़ा, सोलाँ जतीआँ मै, सनमान कराई।
ताँबा पत्र उूपर तहि बादर्शाह सै सुगन्ध लिखाई।

निशान निगारा सोलाँ जाताँ में मलूकी राँगड़ी लिआइ (पन्ना 21, शहीद बिलास भाई मनी सिंह) भाई मनी सिंह जी के पिता जी बाराँ भाई, भाई मलूका, भाई रूड़ीआ, भाई रूपीआ, भाई जैमल, भाई बीरीआ, भाई नेता, भाई शाहू, भाई सुन्दर, भाई माधौ, भाई रणीआ, भाई सुहेला ओर भाई माईदास, तथा तेरवीं बेहिन मलूकी जी थे।

भाई माई दास जिस का शाहजहाँ के शाही दरबार में अचछा रुतबा था, की दौ पतनीआँ थीं, मधुरी बाई तथा लडीकी थीं।माता मधुरी बाई की कुख से 7 बीर बेटों ने जन्म लिया ओर परमाणित किया,जननी जने तो भगत जन के दाता के सूर। भाई अमर चन्द को छोड कर शेश छे पुत्र गुरू घर की सेवा करते शहीद हूऐ। भाई दियाला जी मुगलों के जुलम सहारते हुऐ गुरू भाणे में रहि कर साहिब श्री गुरू तेगबहादर जी के सनमुख देग में उबाले गऐ ओर शहीदी प्रापत की। शहीद भाई मनी सिंह जो तीसरे सथान पे थे, सारी उुमर गुरु घर की सेवा की तथा हर जन्ग में शहीद भाई मनी सिंह ने बहादरी के साथ हिसा लिया तथा 90 साल की उुमर में बन्द बन्द कटवा कर शहीदी प्रापत की तथा सिदक की मिसाल कायम की; प्राचीन पन्थ प्रकाश में भाई मनी सिंह की शहीदी के बारे ऐक दोहरा लिखा है:- मनसूर मनसूर ईस जग भयो कटे हाथ ऐक सट। मनी सिंह बहु सट सही , बन्द बन्द सटिओ कट। (प्रचीन पन्थ प्रकाश 227)

शहीद भाई मनी सिंह के पाँच भाई सन्धूरी बाई के उुधर से जन्म लेने वाले , जिनों ने शहीदी प्रापत की, उुन के नाम ईस परकार हैं:-

1. भाई जेठाँ सिंह (शहीदी 11-10-1711 ई: आलोवाल)
2. भाई दिआला जी (शहीदी 11-11-1675 ई: दिळली)
3. भाई दान सिंह (शहीदी 07-10-1705 ई: चमकौर)
4. भाई मान सिंह (शहीदी 03-04-1707 ई: चतौड़गड़)
5. भाई रूप सिंह (शहीदी 11-10-1710 ई: आलोवाल)

माता लडीकी बाई जी के उुधर से पाँच पुत्रों ने जन्म लिया तथा पाँचो पुत्र गुरू घर की सेवा करते शहीदीआँ प्रापत कीं, उुन के नाम ईस परकार हैं:-ईस परकार लिखा है:

1. भाई जगत सिंह (शहीदी 24-06-1734 ई: लाहौर)
2. भाई सोहण सिंह (शहीदी 20-03-1691 ई: नदोण)
3. भाई लहिणा सिंह (शहीदी 20-02-1696 ई: गुलेर)
4. भाई राऐ सिंह (शहीदी 30-12-1705 ई: मुकतसर)
5. भाई हठी सिंह (शहीदी 18-09-1688 ई: भन्गाणी)

शहीद भाई मनी सिंह का जन्म 1 चेत्र सुदी दुआदसी दिन रवीवार सन्मत 1701 बि: (10 मारच 1644 ई) को चन्द्रबन्सी भारदवाजी पन्वार गोत्र के राजपूत माईदास के घर माता मधुरी बाई की कुख से, गाँव अलीपुर उुतरी जो आज तहिसील वा जिळला मुजफर गड़ पछमीं पन्जाब, पाकीसतान, में है,में हुआ, जिस का मुलतानी सिन्धी वही में ईस परकार लिखा है :-“ बधाई ली मनी राम की बेटा माईदास का पोता बळलू का पड़पोता मूले का सन्मत 1701 बरखे राह चेत्र सुधी दुआदसी रवीवार शुभ वार शुभ घड़ी जन्म हूआ, कुल प्रोहत बोहथ भाट को माना, गुरु की कड़ाही की” (पन्ना 20 गुरू की साखीआँ)

भाई मनी राम जी तेराँ बंस की उुर्म में अपने पिता माईदास के साथ श्री गुरु हरि राऐ साहिब जी के दरशन के लिऐ कीरतपुर साहिब आऐ। गुरू दर्शन करने से भाई मनी राम निहाल हूऐ। साहिब श्री गुरू हरि राऐ साहिब ने भाई मनी राम के सुन्दर सरूप, बलशाली हौनहार बालक देख कर निहाल हूऐ तथा बचन किया:-

“ मनीआ ईह गुनीआ होवेगा बीच जग सारे। सेवा हरी श्री मुखों किहा यह सुनाऐ जी”। (पन्ना 55, शहीद बिलास भाई मनी सिंह)

जब भाई मनी राम ने गुरू साहिब के द्रशन किऐ अैसा आनद पाया कि आप गुरू घर के ही हो कर रहि गऐ। दो साल आप ने अपना मन साफ करने के लिऐ जूठे बरतन साफ करने की सेवा तथा गुरु सन्गतों की सेवा में बिताऐ। समाँ मिलने पे भाई मनी सिंह गुरू जस सुनतेतथा गुरबाणी की विचार करते तथा बहुत पिआर से गुरू किरपा से गुरबाणी का पाठ। पन्दराँ साल की उुर्म ही भाई मनी सिंह की हूई थी के आप के पिता माईदास जी गुरू आगिआ से आप को शादी के लिऐ वापस गाँव ले गऐ।असाड़ की पूरनमा के दिन भाई लखी राऐ, यादव बड़तीआ गाँव खैरपुर के निवासी की बेटी सीतो बाई के साथ भाई मनी सिंह की

शादी हो गई। यहाँ यह बताना अती अवशक है कि भाई लखी राऐ ने ही साहिब श्री गुरू तेगबहादर जी की शहीदी के बाद बहुत हिन्मत के साथ गुरु जी के पवित्र शरीर का सन्सकार अपने घर को आग लगा कर किया था। भाई मनी सिंह की दो शादीआँ हूईं। पहिली शादी लखी राऐ बड़तीआ की बेटी सीतो बाई के साथ तथा दूसरी शादी गुरीऐ चौहान हजावत की बेटी खेमी जी के साथ हुई। शहीद भाई मनी सिंह के दस पुत्र हूऐ, जिन में सै छे पुत्रों का जन्म माता सीतो बाई की कुख से हुआ जो ईस परकार हैं:

1. चित्र सिंह (शहीदी 1734 ई: लाहौर भाई मनी सिंह के साथ)
2. बचित्र सिंह (शहीदी 1705 ई: मलकपुर रन्गड़ाँ, कोटला निहन्ग में सवास दिऐ)
3. उदै सिंह (शहीदी 1705 ई: शाही टिबी परगना भरतगड़ राज कहिलूर)
4. अनिक सिंह (शहीदी 1705 ई: चमकौर परगना रोपड़)
5. अजब सिंह (शहीदी 1705 ई: चमकौर परगना रोपड़)
6. अजाएिब सिंह (शहीदी 1705 ई: चमकौर परगना रोपड़) मता खेमी बाई की कुख से चार पुत्र हूऐ जो ईस परकार हैं:-

1. गुरबक्ष सिंह (शहीदी 1734 ई: लाहौर भाई मनी सिंह के साथ)
2. भगवान सिंह (शहीदी 1700 ई: किला फतेगड़ प्रगना सहोटा)
3. बालराम सिंह।
4. देसा सिंह, जिस ने सिख रहितनामां लिखा।

भाई मनी सिंह के सारे पुत्र ऐक से बड़ कर ऐक योधा थे तथा हर सम्य युध के लिऐ तआर रहिते थे। गुरू के हुकम से कभी भी पीछे नहीं हटते थे तथा गुरु हुकम को गुरू किर्पा मानदे थे।बीर बचित्र सिंह को जब श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने मसत हाथी के साथ लड़ने का हुकम दिया तब बचित्र सिंह ने ईस को गुरु जी की किर्पा समझा तथा झट तिआर हो गया। सिन्घ गुरू जी के हुकम पे जान निशावर करते थे। जलाई 1675 ई: में जब तिलक जन्जू की रक्षा के लिऐ नावें गुरू साहिब श्री गुरु तेगबहादर जी दिळली को चले उस सम्य भाई मनी सिंह, भाई जेठा जी, भाई दिआला जी, भाई मतीदास, भाई सतीदास, भाइ उधा रठोर आदि सिख गुरु जी के साथ थे। गुरू तेगबहादर जी ने भाई मनी सिंह तथा भाई जेठा जी को गुरू गोबिन्द सिंह जी की सेवा में अन्दपुर में रहिने का हुकम दिया।

अन्नदपुर में रहिते हूऐ भाई मनी सिंह जी गुरू परीवार की तथा सन्गतों की तन मन से तथा सिदक के साथ सेवा करते रहे। गुरूबाणी पड़न, कन्ठ करना तथा समझण की ओर पूरा धिआन देते रहै तथा सिख ईतिहास की तवारीखी खोज की ओर धउान दिया।नोंवे गुरू साहिब श्री गूरू तेगबहादर जी की शहीदी के बाद भाई मनी सिंह , श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के हजूरी सिखौं में शामल थे। भाई मनी सिंह जी कुशल लिखारी, गुरूबाणी अरथ बोध के गिआता, युध के लिऐ सूरबीर योधे तथा सिखी सिदक से भरपूर जजबे वाले सिख थे। ईसे लिऐ गुरु साहिब जी ने भाई मनी सिंह से श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी की बीड़ लिखवाई तथा उस के कई उतारे करवाऐ।भाई सेवा सिंह भाट ने काव बन्द राही ईस तराँ लिखा है। सेवा सी करन्त ते रहित गुराँ पास सदा, लिख-लिख बाअदी करे पोथीआँ तिआर ईह। पड़दा पड़ाँदा ते जताँदा नहीं आप ताईं, मन नीवी मत उूँची एिहो दिल धार एिह। हठी -तपी पूरा सिखी सिदक का पुतला, साखीआँ सिदक कीआँ करता उचार एिह। सेवा हरी एिवे किवें बीत गऐ बरख कई, युध के कारन में बड़ा होशिआर एिह।

आयु पैंती बरख की मनी सिंह की आहि, लिखे लिखाऐ पोथीआँ मन महि बुह उतशाह।

जब साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी राजा मेदनी प्रसाद के बुलावे पे 1685 ई: को नाहन पहुंचे उस सम्य भाई मनी सिंह भी उन के साथ था।साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने पाउोंटा साहिब वसाएिआ तथा वहाँ रहिने लगे।भाई मनी सिंह भी गुरू जी की सेवा में हाजर थे। उनका साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के52 कवीओं में बड़ा सथान था। ईस बारे भाट भाई सेवा सिंह ने काव सन्गरिह मैं लिखा है:-

देस बदेस ते सन्गत आवे। गोबिन्द का दर्शन पावै।
बावन कवी गुरू ड़िग रहे। मनीआ उुन महि गुनीआ अहै।

पाउोंटा साहिब में रहिते हूऐ भाई मनी सिंह गुरू हुकमों की पालना करते हूऐ बाबा राम राऐ की पहिली बरसी पर चुणिदा सिखों के साथ देहरादून गऐ। जब मसन्द गुरबखश रामराएिऐ ने साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिँह जी के लिऐ गलत शबद बोले, जिस को सुन कर भाई मनी सिंह तथा दूसरे सिखों ने उुस को अछी तराँ सोधा। सन्मत 1745 बि: (सन 1688 ई: को जब सिरमोर के राजे फतेशाह ने गुरू जी के साथ, ओर राजों के साथ मिल कर, युध किया, जिस को भन्गाणी का युध भी कहा जाता है, भाई मनी सिंह ने अपने बेटों के साथ मिल कर खूब जौहर दिखलाऐ। भन्गाणी के युध का जिकर देसू भाट ने पाँच साल बाद भाई मनी सिंह के बेटे की शादी पे उुन की उुसततती में गाएिन किया, जो ईस परकार है:-

सिमर भाट तउू सतिगुरू अपना गिआन बतावे सचचा,
दिली तक धाँक सुनी तेरी बलू तउो जाने शाह चुगिता,
सपूत पोता तउो राउो मनी राम रोशन बन्स जळले का किता,
पैराँ हेठ भन्गाणी मारी राना घाएिल कीआ रण जीता।

ईसी परकार नदौण की जन्ग में गुरू साहिब ने चौणिदा सिखौं के साथ कहिलूर के राजे भीमचन्द की सहाएिता की। मनी सिंह ने वी गुरू किर्पा से खूब तलवार चलाई तथा दुशमनों का खूब कतलेआम किया। युध में विजे के बाद अन्दपुर पहोंच कर गुरू जी ने

परसन्ता के साथ भाई मनी सिंह को दरबारी दिवान बनाएिआ तथा भाई मनी सिंह ने गुरू घर की बहुत लगनके साथ सेवा की। नदौण के युध का जिकर देसू भाट ने ऐक दोहे मैं ईस परकार किया है:-

"साका किया नदावण तै ने, घालिआ राना बीर परबता।

धन धन माता मधुरी बाई , तउो जाएिआ मनीराम पूत सपूता"

1694 ई: को जब दिवान बन कर भाई मनी सिंह साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंह के साथ हारिद्वार आऐ तो इस बारे पन्डा खेम चन्द हारिद्वार की वही में यह लिखा है:- "लिखतँ मनीराम बेटा नाएिक माईदास का पोता बळलू का पड़पोता मूले का जतीया पन्वार - बन्स बींझे का बन्झरउोत जलहाना बासी अलीपुर प्रगना मुलतान मिती 2 चेत सन्मत 1751 को गुरू गोबिन्द राऐ के साथ दीवान हो कर हरिद्रुआर आऐ, सुख के ईशनान" (पन्ना 16 गुरू किया साखीआँ)

अपनी हथियार चलाने की कला के कारन भाई मनी सिंह समकालीआँ में परमुख योदा माने जाते थे। अन्नदपुर यद में जहाँ बचित्र सिंह ने हाथी के माथे में नागनी नेजा मार कर हाथी को पीछे भगा दिया, वहीं भाई मनी सिंह ने भी दुशमन के साथ खूब तलवार चलाई तथा बहादरी का परदर्शन किया। भाई मनी सिंह को दरबारी दिवान बनने के बाद अनेकाँ माली, सिआसी, तथा प्रबन्धकी मसलों की ओर धिआन देना पड़ता था।भाई मनी सिंह ईतनी विवसथा होना के बाद भी ,गुरू ग्रन्थ के अर्थों का गिआन करने तथा सन्गतों को श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की कथा विआखिया के साथ समझणे के लिऐ सम्य निकाल लेते थे। भाई सेवा सिंह के अनूसार भाई साहिब हर रोज अन्नदपुर सिख सन्गतों को श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की कथा सुनाते थे।:-

कथा रोज गुरू ग्रन्थ की सन्गत ताईं सुनाऐ,

अन्नदपुरे कुछ सम्य बीत गयो थी आऐ (शहीद बिलास)

भाई मनी सिंह श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की कथा करनी सिख सन्गतों के कलिआण के लिए जरूरी मानते थे। ईन के नाम पे श्री गुरू ग्रन्थ साहिब की कथा वाचकों की सन्परदाऐ भी छुरू हूई जिस को गिआनीओं की सन्परदाऐ कहा जाता है। भाई मनी सिंह को ईनकी विदवता तथा गिआन के कारन श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने आप को अम्रतपान करवाने के बाद अम्रतसरी सिखों की बेनती पे पाँच सिखों के साथ अम्रतसर श्री हरिमन्दर साहिब तथा अकाल बुन्गेका सेवादार बना कर भेजा था। ईस बारे भाई सेवा सिंह लिखते हैं कि भाई मनी सिंह के साथ भाई भूपत सिंह, गुलजार सिंह, कोयर सिंह चन्द्रा, दान सिंह तथा कीरत सिंह गऐ। तहिकीकात चिसती के लिखारी मोलवी नूर अहिमद (पन्ना 695 पे) गुलजार सिंह का ईनके साथ आना लिखता है। (पन्ना 27 शहीद बिलास भाई मनी सिंह) रतन सिंह भन्गू ईस कथन की पुशटी करते हैं:-

प्रथमें भुजन्गी वल माझे घलाऐ। दे दे पाहुल गुरू चक बहाऐ...36। (प्रचीन पन्थ प्रकाश छाप तीसरी पन्ना 47) शन्मत 1763 बि: (1706 ई:) की जेठ सुदी चौथ को देसा सिँह भाट की टोलि भाई मनी सिंह के पोते भागू सिंह की वधाई के लिऐ श्री अम्रतसर साहिब पहुँची ।ईस सम्य देसा सिंह भाट ने भाई मनी सिंह के प्रीवार की वीरता के बारे कहा:-

जलहाने पन्वार बाँके अलीपुर के बन्झरोतो तउो से कौन अड़े।

जासवारी गाँव का मारिआ केसरी, हाथी गैल लरै।

बचित्र सिंह तेरी बरछी , तेरी साँग झरमल करै।

तेरे नाँ थी रिपु थरथर काँपे, तेरी परबती हलक परे।

धन्य माता तउो सीतो बाई तेरे पाँच सपूत रनै ललर मरे।

बीर मनी सिंह जस तउो का गाउूँ, तेरा नां चउौं कुन्टी मुख परे।

धन्य धन्य दिआल दास जस तउो का खन्ड ब्रहिमन्ड मून्ड सब उचरे।

चार बरन खट दर्शन सारे रटत नां निस बासर घरै।

जस जौड़ देसा भाट भनिआ, साल सत्राँसै तरेसट।

अुजल दान दीउो गलजोट करे।

थी वधाई पोते भागू सिंह की गुरू चक के मलहान,

जेठ चानना चौथ रुपउो से मून्ड भरै।(पन्ना 32 शहीद बिलास भाई मनी सिंह) जब गुरू गोबिन्द सिंह जी ने दक्षण की ओर जाने की तिआरी की तथा सभी सन्गतों को लखी जन्गल के गाँव तलवँडी (दमदमा साहिब) से विन्ग कसाएीआँ का हवाला देते हूऐ सिख सन्गतों को बुलाया तो भाई मनी सिंह जी सन्गत के साथ श्री अम्रतसर से गुरू चरनो में हाजर हूऐ। गुरू जी का दक्षण को जाना सुन कर दूर नेड़े से सन्गताँ उुतशाह के साथ गुरू जी के दरशनो के लिऐ पहुँचीं। सन्गतों ने बेनती की 'जी पातिशाह! दक्षण को जाने का नाम किउों लेते हो' गुरू जी ने बचन किया, 'ना वे ! हमारा काम ही है, हम ने जरूर जाना हे...। दक्षण जाने की पुशटी हुकनामा पा: 10 से जो 20 कतक 1763 बि (21 अकतूबर , 1706 ई:) को भाई रूपे की सन्गत, भाई धरम सिंह आदि सिखों के नाम भेजा था से होती है:-

ੴ श्री सतिगुरू जी । श्री गुरू जी की आज्ञा है।

सरबत सन्गत बैराड़ाँ की गुरू राखेगा,

गुरू गुरू जपणा जनम सँवरेगा...भाई धरम सिंह रूपे का।

सरबत सन्गत बैराड़ाँ की, भाई रूपे की वसदी की गुरू राखैगा।

4 बैल हछे बहला को भेजणे हुकम देखदिआँ,

मेरी तुसाँ उुपर खुशी है। असाँ दक्षण को कूच कीता है।

जिन सिख साडे साथ चलना होऐ तिन हुकम देखदिआँ,

हजूर आवणा मेरी तुसाँ उुपर खुशी है तुहाडी गुरू जी रखैगा।

सन्मत 1763 मिती कतक 20 (पन्ना 185 हुकनामे गन्डा सिंह) शहीद बिलास के अनूसार भाई मनी सिंह बघोर से वापस अम्रतसर आ गऐ थे। गुरू साहिब के दक्षण जाने के बाद सिखों मे कुछ मजूसी छा गई थी । भाई साहिब ने सिखों में शरधा- भाव को बनाई रखने तथा उुनकी उुदासी दूर करने के लिऐ ऐक तारीका बाबाणीआँ, कहाणीआँ का सोचा। भाई सेवा सिंह बताते हैं:- दक्षण देस सतिगुरू गऐ, सन्गत भई उुदास।

धीरज देवे मनी सिंह रच साखीआँ खास।99। (शहीद बिलास)

दशमेश पिता साहिब श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के कतक सुधी पँचमी 1765 बि: (1708 ई:) को नदेड़ (दक्षण) में जोती जोत समाने के बाद सिखी की लहिर को सोके से बचाने के लिऐ भाई मनी सिंह ने संम्मत 1766 बि:(1709 ई:) की विसाखी अम्रतसर में मनाने के लिऐ दूर दूर पत्र भेजे। विसाखी के सम्य सिखौं का चूहड़ मल के पुत्र रामू मल के साथ, जो भाई सेवा सिंह के अनूसार सोढी निरन्जण राऐ का सेवक था, शहितूत की तूतीआँ की छोटी सी बात पे झगड़ा हो गया जो बड़ता बड़ता गन्भीर रूप धारन कर गया। बहुत समझाने पर भी झगड़ा खतम नहीं हूया तो सिखौं ने रामू मल को खूब रगड़ा लगाया। इस पे चूहड़ मल नाजम लाहौर राहीं हरि सहाऐ, हाकम पटी की फौज चड़ा लाया, जो तारा सिंह ढिलवाँ के हाथौं 9 विसाख 1766 बि: (1706 ई:) को मेदाने जंग में मारा गया। इस जंग का जिकर जैपुर राज की खबरों में भी आता है। 19 जेठ 1767 बि: को जब बहादर शाह बादशाह दक्षण से राजपूताने में टोडे पड़ाउो पे पहुँचा तो बहादर शाह बादशाह के पूछने पर सिखौं की हकीकत शहीद बिलास भाई मनी सिंह में ऐसे लिखा है:-

" सब से पहले तालूका परगना पटी में चक गाँव, जो गुरू चक कर मशहूर था युद का सम्य बना। खालसा सिख जीत गऐ। लाहौर से भेजी जमीअत उुन पे काबू ना पा सकी। मगर वो जालँधर की ओर सारे देश पे छागए और उुनहो ने लूट मार जारी की। इन हालातों में वजीर खाँ ने अपनी फौज भेजी। अन की बुरी किसमत कि उुनके सरदार भी मारे गऐ," (फुर नोट पन्ना 27 शहीद बिलास भाई मनी सिंह) चूहड़ मल यह बदनामी सहार ना सका ओर दाद फरियाद ले कर लाहौर के नाजम असलम खान को जा मिला। उुस ने एक चौदरी देवे को मुलखइआँ तथा अपनी फौज दे कर चूहड़ मल की सहाएिता के लिऐ अम्रतसर भेज दिया। लड़ाई की कमान भाई मनी सिंह कर रहे थे। सिखौं ने मुलखइीआँ और नाजम की फौज को भगा दिया। यह घटना 15 विसाख की है। इस की परोड़ता कवी दरशन रचित ,'वार अम्रतसर की' तथा प्रकाश (छाप तीसरी पन्ना 203) से भी है। कवी दरशन रचित वार अम्रतसर में यू लिखा है:-

" सन्मत सतराँ सै छिआसठ राज बहादर शाही।

चक गुरू का घर नानकी का, दिनु दिन कला सवाई।

सहल काम से कावस उुठी, की बाबत तर कारी।

दिन वेसाखी तूत झड़ाऐ, खोही सिखाँ खारी ।4।

इस तरह भाई मनी सिंह की जीत को पँजाब में मुगल राज की नाकामी के ईतहास मे, एक अहिम पड़ा समझना होगा। उुस सम्य भाई मनी सिंह की आजु 65 वँक्ष थी। जब 30 मघर 1767 बि: (30 नवन्बर, 1710 ई:) को बाबा बन्दा सिंह जी लोहगड़ के किले से अपनी जगा भाई गुरबकश सिंह बकशी को छौड कर फौज के घेरे से निकलने में सफल हो गऐ। अगले ही दिन किला बादशाही फौजों के हाथ आ गया। इस तरह सारा देस सिखौं के हाथ से निकल गया। हकूमत की ओर से खालसा लहिर को दबाने हेतू पूरी ताकत से काम लिया। इस का असर गुरू की नगरी अम्रतसर पे भी पड़ा काम करने वाले सभी भाई साहिब का साथ छोड गऐ। मगर यह निरभै, निरमाण तथा निशकाम सेवक 'सेवक को सेवा बन आई' के शुभ भाव को समझते हूऐ गुरू दरबार की सेवा मे डटा रहा। सिखों, में फुट डालने की नीती से सन्मत 1767 बि: (1711 ई:) में बादशाह बहादर शाह के जनम दिन पे माघी के दिन अम्रतसर की 12 गाँव की जागीर जो पहिले जबत कर ली थी, माता साहिब कौर जी के पालित पुत्र अजीत सिंह को वापस करदी।

खालसे की आपसी फुट के कारन ही बाबा बन्दा सिंह बहादर को गुरदास नँगल की गड़ी मे लंम्मे सम्य के घेरे के बाद 740 साथीओं के साथ बन्दी बना कर बहुत कशट देते दिळली लाने के बाद गैर मानवी कशट देकर जून 1716 ई: को शहीद कर दिया गया। बाबा बन्दा सिंह बहादर की शहीदी के बाद तत खालसा तथा बुन्धई खालसे, जिस की अगवाही अमर सिंह खेमकरनीआ कर रहा था, में दरबार साहिब पे कबजे के लिऐ झगड़ा शुरू हो गया। सन्मत 1780 बि: (1723 ई:) की दीपमाला को बन्दई तथा तत खालसे का झगड़ा खतम करने के लिऐ माता सुन्दरी जी ने दिळली से भाई मनी सिंह को अम्रतसर भेजा। उुस सम्य अकाल तखत साहिब पे तत खालसे के बाबा काहन सिंह का कबजा था। झँडा बुँगा पर महँत अमर सिंह बन्दई खेमकरनी का अधिकार था। विसाखी के दिन भाई मनी सिंह ने तजवीज पेश की के पँची डाल कर फैसला किया जाऐ। एक पँची पर वाहिगुरू जी की फतिह लिखा गया तथा दूसरी पँची पर 'फतिह दरशन'। जब पँचीआँ सरोवर में फैंकी गईं तो कुछ सम्य बाद 'वाहिगुरू जी की फतिह' वाली पँची उूपर आ गई। ईस परकार यह झगड़ा शाँती से निपट गया (पन्ना 104 शरोमनी शहीद)

रतन सिंह भन्गू लिखता है कि परचीआँ नीकालने के बाद भी झगड़ा खतम नहीं हूया। तत खालसा तथा बन्दई सिखों में कुशती लड़ी गई तथा खेमकरनीआ सिंह मारा गया तथा खालसे की जीत हूई। भाई मनी सिंह ने 79 साल की उमर में अमर सिंह बन्दई की जगहा सेवा सन्भाली। भाई रतन सिंह भन्गू लिखता है:-

सिखन को सिखी दिरड़ावे। सिखीउों चूके तिस तनखाह लावे।
बीज बीजे वहि गुरमत लावे। चार वरन को सिखी द्रिड़ावे।
माता भेजिउो तिसे थो दिळली से समझाऐ।
अम्रतसर चड़ती चड़े शसखन जाहि खवाऐ।6।

सन्बत 1790 बि: (1733 ई:) को भाई मनी सिंह ने दिपावली का तिउोहार श्री अम्रतसर में बड़ी धूमधाम से मनाने की तरतीब बनाई तथा ईस के लिऐ सूबा लाहौर से मेला करवाने के लिऐ परवानगी ईस शर्त पर मिली कि सिख मेले के बाद 5000/- टके सरकारी खजाने में जमाँ करवाऐं गे।सूबा लाहौर ने सिखों का पूरा खातमाँ करने का अचछा सम्य जान कर साजिश के अधीन अपने भरोसेमन्द वजीर लखपत राऐ को गुपत रूप से अम्रतसर भेज दिया। ईस लखपत राऐ ने पहिले भी सिखों पे बहुत जुलम किऐ थे। जब भाई मनी सिंह को ईस साजिश का पता चला तो भाई मनी सिंह ने सुनेहे भेज कर सिखों को आने से मना कर दिया। ईस तराँ ना ही मेला लगा ना ही कोई आमदन हूई ईस लिऐ जजीआ जमाँ करवाना कठन था। सरकार की ओर से जजीआ जमाँ करवाने के लिऐ जोर देने पर भाई मनी सिंह ने अगली दीवाली तक सूबा लाहौर को राजी कर लिया। ईस बार भी लाहौर की सन्गत से भाई मनी सिंह को सूबा सरकार की सिखों पर हमले की बुरी साजिस का पता चला।भाई मनी सिंह ने सुनेहे भेज कर सिखों को अम्रतसर आने से ऐक वार फिर मना कर दिया। ईस परकार ईस वार भी मेला नहीं लगा तथा ना ही कोई आमदन हूई। ईस लिऐ जजीआ जमाँ करवाना कठन हो गया।

बाबा बन्दा सिंह बहादर की शहीदी के बाद भाई मनी सिंह सूबा लाहौर की आँखौ मै, चुब रहा था तथा सूबा लाहौर भाई मनी सिंह को पकड़ने के लिऐ अवसर ढुँड रहा था। ईस सम्य सूबा लाहौर को जजीआ ना जमाँ करवाने का अवसर मिल गया, जिस को बहाना बना कर मुगल फौजों ने श्री अम्रतसर पे हळला बोल दिया। भाई मनी सिंह तथा दुसरे हाजर सिख भाई जगत सिंह, भाई चित्र सिंह, भाई गुलजार सिंह, भाई रण सिंह, भाई भूपत सिंह आदि जो सारे ही भाई मनी सिंह के परिवारक सदरुय थे को बन्दी बना कर लाहौर लायिआ गया तथा जेल में नजरबन्द कर दिया।भाई मनी सिंह जेल में नितनेम का पाठ करते तथा अपने साथीओं को चड़ती कला मे रखने के लिऐ बहादरों तथा गुरू कीआँ साखीआँ सुनाते। भाई मनी सिंह पे सूबा लाहौर ने जजीआ ना जमाँ करवाने का दोश लगाएिआ जो भाई मनी सिंह जी ने बिलकुल बेऐिनसाफी बताते कहा जब आप ने मेला लगने ही नहीं दिया , जजीआ किस बात का? दूसरा भाई मनी सिंह को जे सिख मिलने के लिऐ आते थे, उुनको पकड़ाने के लिऐ कहा मगर भाई मनी सिंह ने यह मानने से ईनकार कर दिया। तीसरा सूबा लाहौर ने भाई मनी सिंह के दीन कबूल करने को कहा तथा भाई मनी सिंह ने साफ इन्कार कर दिया। भाई मनी सिंह ने सूबा लाहौर को दुबारा ऐसा ना बौलने के लिऐ कहा। ईस बारे प्राचीन पन्थ प्रकाश मे ईस प्रकार लिखाहै:-

" हम सिदक ना हारें। कई जनम सिदक सु गारे।।
देही किसकी बापरी सिखी जि साबत हौऐ।।
देह तो आवण जाण है सिखी लभै कब कौऐ"।।

जब भाई मनी सिंह ने सूबा लाहौर की कोई बात ना मानी तो सूबे ने पहिले, भाई मनी सिंह, के साथ कैद किऐ सिखौं को भारी कशट देने तथा भाई मनी सिंह के बन्द बन्द जुदा करने का हुकम दिया। जब लाहौर की सन्गत को यह पता चला तो सन्गत को बहुत चिन्ता हूई। सन्गत ने पैसे ईकठे करके जजीआ जमाँ करवाने की बात की ताँ जो भाई मनी सिंह को जालमों के पन्जे से मुकत करवाएिआ जाऐ। जब ईस का भाई मनी सिंह को पता चला तो भाई साहिब ने ईसे नकार दिया तथा जुलम के आगे ना झुकने तथा गुरू का भाणा मानने को कहा।भाई मनी सिंह ने गुरू आगे अरदास की किह गुरू सिखी सिदक निभाने की शकती दे तथा यह बूड़ा शरीर जो आज कल नशट होना है पन्थ लेखे लग जाऐ। ईस परकार जून 1734 ई: (सन्मत 1791 बि:) को भाई मनी सिंह को शहीद करने से पहिले उनके साथ पकड़ कर लाऐ गऐ सिखौं को बहुत कशट दे कर शहीद किया गया।तथा सन्मत 1791 बिकरमी हाड़ सुदी पन्चमी (24 जून 1734 ई:) को लाहौर के निकास चौक में भाई मनी सिंह को जलादौ ने कशट दिऐ ।भाई मनी सिंह की पहिले अुँगलीआ का पौरा पौरा, गुट, कूहनीआ, बाजू, कन्धे ,तथा बाद में पाउौं की उुँगलीं, गिटे, गोडे, तथा कूहले काटे गए अन्त मे गरदन काट दी इस तरह बहुत कशट देकर भाई मनी सिंह को शहीद किया गया। भाई मनी सिंह ने यह सारे कशट खिड़े माथे गुरूबाणी का जाप करते सहे तथा मुगलों की ईन नहीं मानी ना ही अपना दीन धंम बदलनाँ मनजूर कीया ईस परकार भाई मनी सिंह ने सिखी में रहित मरिजादा में रहिते अपना जलौआ दिखलाएिआ। भाई मनी सिंह को बन्द बन्द काट कर शहीद करने के बारे सम्य के सरकारी रिकारड अनूसार, लगभग सभी इतिहासकारों तथा भाटों आदि के ऐक ही विचार हैं। भाई सेवा सिंह भाट ने ईस शहीदी को अपनी कावि सतरों में ईस तरह लिखा है:- हाड़ सुधी पन्चम थित आहि। सतरह सै ईकानवैं माही।

जाए निखास चौंक के बीच। सूबे खान बहादर नीच।
पहिले मनी सिंह के ताँईं। काजी फतवा दीउौ सुणाई।

तसै गैल जलादै आए। बन्द बन्द दीऐ जुदा कराऐ।

जहाँ भयो एिह साका भारी खलकत देखण आई सारी।

भाट वही मुलतानी सिन्धी में ईस शहादत की लिखत है:-

मनी सिंह, माईदास का, पोता बळलू का पड़पोता मूले का शाही हुकम गैल आसाड़ सुधी पन्चमी शन्मत 1791 को लउहौर के मलहान घड़ी दिन चड़े बन्द बन्द काट भू काट आया, गैलो, जगत सिंह बेटा माईदास का, चित्र सिंह बेटा मनी सिंह का, गुरबकश सिंह बेटा मनी सिंह का मारे गऐ आगे गुरू आप भाणे का खाविन्द, गुरू गुरू जपण जनम सवरेगा"।(भाट वही मुलतानी सिन्धी पन्ना 21 गुरू कीआँ साखीआँ)प्राचीन पंथ प्रकाश में भाई मनी सिंह जी की शहीदी बारे लिखा है:- मनसूर मनसूर ईस जग भयो।कटे हथ ऐक सट।

मनी सिंह बहू सट सही। बन्द बन्द सुटिया कट। (पन्ना 227, प्राचीन पन्थ प्रकाश) अँम्रित सिंह 'चौधरी' भाई मनी सिंह जी की शहीदी बारे लिखते हैं: 'भाई मनी सिंह जी ने अपने सिधाँत के खातर सचे मारग के लिऐ जालम को ललकारा तथा जुलमी सरकार ने उुन के बन्द बन्द काट कर शहीद कर दिया'।

ज्ञानी भजन सिंह 'चौधरी' भाई मनी सिंह जी की शहीदी बारे लिखते है; 'भाई मनी सिंह जी बड़े वडे विदवान थे। अगर यह कहा जाऐ कि भाई गुरदास जी के बाद आप ही वडे विदवान हूऐ हैं तो अथकथनी नही,होगी। आप महान धारमिक आगू तथा साहितकार थे। मुगल शाशकौं ने सिखों की होंद मिटाने की लड़ी में ऐक साजिश के अधीन भाई मनी सिंह को मौलवीऔं से बन्द बन्द काट कर कतल करने का फतवा दिलवाएिआ। भाई मनी सिंह जी ने खिड़े माथे कुरबानी देणे का निसचे किया।भाई मनी सिंह जी पाठ करी जा रहे थे तथा जलाद शरीर के टौटे टौटे कर ढेर करी जा रहा था। आप को अन्त कशट दे कर शहीद किया गया। शहीदी से कौम में ऐसा जौश पेदा हूया के सिख मेदाने जन्ग में निकले तथा मिसले बना लीं तथा अन्त मे मुगल राज पलट कर रख दिया'। लाला मुलक राज भळला भाई मनी सिंह जी की शहीदी बारे लिखते है: 'नाजम ने मुफती से भाई मनी सिंह की बाबत शाह का फतवा माँगा। मुफती बेरहिम का फतवा येह था कि अैसे अहिद शिकन के जिसम के बन्द बन्द जुदा करके अजाब से मारा जाऐ। बचाओ सिरफ ईसी सूरत पर हौसकता है कि वौ दीन ईसलाम कबूल करे। यह सुन कर वेह मुतलिक ना घबराऐ। दीन ईसलाम तो ईनहे किया कबूल करना था साफ ईनकार कर दिया तथा शान्ती से जलाद के साथ हो लिऐ। अन्त असाढ सुदी पन्चमी 1791 बि: को ईनको निखास चौक बन्द बन्द जुदा कर मारा, जहाँ शहीद गन्ज गुरदुआरा है। 'सिख फुलवाड़ी अकतूबर, 1995 में लिखा है ' भाई मनी सिंह जी का जनम भाई माईदास के घर माता मथुरी बाई के गाँव अलीपुर, जिला मुजफर गढ रिआसत मुलतान (अब पछमीं पाकिसतान), में हूआ। आप के दादा भाई बळलु जी बड़े बहादर थे जो छेवें पातशाह श्री गुरू हरिगोबिन्द साहिब जी के सम्य तुरकों के साथ जन्ग करते शहीदी पा गऐ।। मुगल हकूमत ने ऐक साजिश के अधीन भाई मनी सिह को बन्दी बना कर लाहौर ले जा कर असिह कशट देते हूइे बन्द बन्द काट कर शहीद कर दिया । भाई मनी सिंह जी का सारा जीवन ऐक अदुती तथा अनमोलक विरसा है।भाई मनी सिंह का लगभग सारा प्रीवार सिखी सिदक निभाते शहीदीआँ पा गऐ। भाई साहिब की अदुती घालणा सिख पन्थ के लिऐ सदेव चानण मुनारे का काम देती रहेगी।

सिंघ साहिब भाई किरपाल सिंह, भूतपुरव जथेदार श्री अकाल तखत, भाई साहिब इस शहीदी के बारे लिखते हैं- 'सिख कौम की महान जानी पहिचानी सतिकार यौग शहीद शखसीअत भाई मनी सिंह जी का पूरा खानदान ही शहीदों का खानदान है। भाई मनी सिंह जी शहीद का दादा, दस भाई, सात पुत्र, दस पौत्र तथा वे सवम शहीद हूऐ जिस कारन ही आप का प्रीवार शहीदों का प्रीवार बन जाता है।

बीबी कुलवन्त कौर 'ननी' सन्पादक, निरमल मारग में लिखते हैं:-

'भाई माईदास के गिआराँ पुत्र शहादत का जाम पी कर सन्सार से विदा हुऐ उुन में से भाई मनी सिंह जी भी सिखी सिदक निभाते, सच पे पहिरा देते, अडोल शाँत चित रहे। गुरू कर्पा से ही बन्द बन्द कटवाकर शहीद हूऐ। ईन का प्रीवार पंवार राजपूत गुरसिख था तथा इस प्रीवार की शहीदीओं की महिमाँ से भाट वहीआँ भरी पड़ीं हैं'। मशहूर भाट कवी भाई सेवा सिंह जी ने भाई मनी सिंह जी की शहीदी तथा शखसीअत के बारे में शैंधा के साथ काव बन्द कीऐ हैं:-

हे करुनानिध मिहर करो तउो चित्र बचित्र कथूँ यह लीला
जिह पड़न कर सिदक बड़े और कायर सुने मुख रहे ना पीला।अँग
अँग कटे नहि सी कही जिह सीस दयौ सिख भयौ ना ढीला।
सेवा हरी तुआ मध कौउू, सम सिंह मनी नहि भयौ हठीला।
प्रान हरे सजह धरम हित खातर परउुपकार।
ऐसे सिदकी सिख की गाथा कहूँ उूचार। (भाट सेवा सिंह)

-000-

भाई लखी शाह बनजारा (बड़तीआ)

गोत्र बड़तीआ / बरादरी के भाई लखी शाह जिनहें सिख जगत में बाबा लखी शाह बनजारा के नाम से भी जाना जाता है के बारे मे गिआनी गरजा सिह की सम्पादना की गए पुसतक 'शहीद बिलास शहीद भाई मनी सिंह' में दी गईं भाट वहीओं की टिपणीओं के अधार से तथा सरूप सिंह कौशिश की लिखी पुसतक 'गुरू की साखीआँ' जो प्रो: पिआरा सिंह पदम ने सम्पादत की सें मिली जानकारी से पता चलता है कि भाई लखी शाह का नाम सिख इतिहास मैं उस सम्य आया जब ओरंगजेब के जुलमों की आंधी चल रही थी तथा रोजाना सवा सवा मण जन्यउ हिन्दूओं के उतार कर दिळली लेजा कर जलाऐ जाते थे और हिन्दूओं को जबरन मुसालमान बनाया जाता था। कशमीकी हिंदुओं की पुकार सुन कर जब गुरू तेगबहादर साहिब जी जब 'तिलक जन्जू की रकशा' के लिऐ दिळली में शहीदी देने के लिऐ अन्दपुर से रवाना हूऐ ओर दिळली जाते सम्य तीन सिखों के साथ बन्दी बना कर तीन महीने के बाद समत 1732 माह मगहर सुदी तरादसी को दिळली लाया गया। गुरू जी के साथ लाऐ गऐ पहले तीन सिखौं को गुरू जी के संमुख कशट देकर शहीद किया गया फिर गुरू तेग बहादर जी को चाँदनी चौक दिळली में शहीद किया गया। हिंदूओं को डराने के लिऐ गुरू जी का शीश तथा पार्थक शरीर वहाँ चोक में ही पड़ा रहने दिया ओर फौज का सखत पहिरा लगा दिया। ओरंगजेब के जुलम से गुरू नानक नाम लेवा सिखों के मन सहम गऐ किसी की भी हिमत ना पड़ी के गुरू जी के पार्थक शरीर के पास जा सके ओर दाह संसकार कर सकें। रात्रि के सम्य 'दिळली मुहले' के सिख नानू छीपे के घर इकठे हूऐ तथा विचार करने लगे। भाई तुलसी ने कहा गुरू तेग बहादर जी का पवित्र / पार्थक शरीर चाँदनी चौक मे पड़ा है उुसे जैसे कैसे वहाँ से उठाया जाऐ। नानू राऐ छीपे ने कहा कि नायक भाई लखी शाह वनजारे से पूछीऐ उस का टाँडा आज ही नारनोल से आया है। सिख आगे पीछे चलते लखीशाह के टाँडे में 'रसीना गाँव' आ गऐ ओर उसे तीन सिखों तथा गुरू जी की शहीदी की सारी बात बताई। भाई लखी शाह गुरू घर का अनंय सेवक था। सुन कर बहुत दुखी हुआ ओर हाथ बाँध कर सिखों से कहने लगा जो भी आप कहेंगे मैं करने को तयार हूँ। इन्ही विचारों में आधी रात्रि हो गई। भाई लखी शाह टाँडे के साथ किले से कोतवाली की ओर आया जहाँ गुरु जी का पवित्र / पार्थक शरीर पड़ा था। उुसी सम्य वहाँ भाई नानू राऐ, भाई जैता तथा भाई उुधे जी भी वहाँ पहुँचे। अन्धेरी तथा गुबार का फायदा अठाते हुऐ भाई जैता जी ने गुरू जी का पवित्र शीश उठाया तथा छिपते छिपाते अन्नद पुर साहिब को चल पड़ा। अुसी सम्य भाई लखी शाह ने अपने बेटों निगाहीआ, हाड़ी, हेमा तथा ओर सिखों की मदत से गुरू जी का पवित्र / पार्थक शरीर उठा कर बैलगाड़ी में रख लिया तथा अपने धर गाँव रसीना आ गऐ। उुस सम्य अन्धेरा हो गया था, किसी को पता ना चले, इस लिये आदर सहित चारपाई पे गुरू जी का पवित्र / पार्थक शरीर रख कर कूऐं से पानी ला कर गूरू जी के पवित्र शरीर का ईशनान कराया गया। समय की नजाकत को देखते हुए भाई लखी शाह ने अपने घर में ही लकड़ीआँ एकठी की तथा गुरू जी की चिता तयार कर घर को ही आग लगा कर गुरू जी के पवित्र / पार्थक शरीर का दाह सँसकार कर दिया तथा वाहिगुरू जी की रजा में रहते वाहिगुरु जी का शुकराना करने कहा - जिस का कारज तिन ही कीआ, मानस कया विचारा। भाई सन्तोख सिंह जी 'श्री गुरू प्र. सूरज ग्रन्थ' के पन्ना 4481 पे लिखते हैं:-

" नर गन मिलें काज ततकाला।।करत भऐ धरि भाउ बिसाला।।
सभि छपरन को अगनि लगाई।। चिखा बीच तहि अधिक जलाई।। 37
कासट बहुत घ्रित गन डारा।लगी हुतासन लाट उुदारा।।
अंध जळली तबि रोर मचाओ। किनही आनि ईत अगनि लगाओ।।38।।
ईत फरेब सभिहिन महिँ करकै।। सन्सकारै सतिगुरू सुधरिकै।।80।।

श्री गुरू तेगबहादर जी के पवित्र शरीर को चान्दनी चौक से भाई लखी शाह की ओर से ले जा कर संसकार करने के बारे भाट वही यादोबँसीआँ की खाता बड़तीऐ कनाउुत का में भी लिखा है, जो गुरू की साखीआँ किताब के पन्ना 85 ते भी अंकित है:-"लखीआ गोधो का नगाहीआ, हेमा ,हाड़ी बेटे लखीऐ के यादोबँसी बड़तीआ कनाउूत, नाइक धूमाँ बेटा काने का तूमर बिजलाउूँत गुरू तेग बहादर जी महिल नावाँ की लाश उठाऐ लाऐ, साल सतराँ से बतीस मँगसर सुधी छठ गुरूवार के दिहों दाग दीया रसीना गाम में आध घरी रैन रही" (गुरू की साखीआँ पन्ना 85)

भाट वहीओं के अधिअन से पता चलता है कि भाई लखी शाह जी के पिता का नाम गोधू राऐ तथा बाबा का नाम ठाकुर दास, बँस परशोतम का चन्द्रबँसी यादव, गोत्र बड़तीआ कनाउुत था, जो गोआर राजपूतों के से है। लखी राऐ के आठ पुत्र (निगाहीआ, हेमां, हाड़ी, सीतू, पुन्डारा, बखशी, बाला व जवाहर) थे, तथा एक बेटी सीतो बाई थी जो शहीद भाई मनी सिंह की विवाहिता थीं। सीतो बाई की शादी के सम्य भाई लखी राऐ का टाँडा खैर पुर, तहिसील अलीपुर, जिला मुजाफरगड़ में था। बाबा लखी शाह की धंम पतनी का नाम पारो देवी था जो गराँबनी गोत्र के गोआर राजपूतों की बेटी थी। भाट वहीओं से बाबा लखी शाह बनजारा बड़तीआ जी की माता का नाम तथा जन्म की तिथी कहीं नहीं मिलती मगर भाई रणधीर सिंह सन्भलजी ने जीवान भाई लखी शाह वानजारा (राजपूत) पन्ना 30 पे लिखा है;- "बाबा लखी शाह जी वनजारा का जन्म पितता गौधू रामके ग्रहि मैं माता शरनी जी की कौख से, गाँव खैरपुर जिला मुजफरगड़ मैं 20 मार्च सन्न 1613 में हुआ"

भाई लखी शाह व उनका परीवार एक सन्पन अमीर परीवार था जिन के पास लाखौं बैल तथा उूँठौं की लम्बा काफिला था। भाई लखी शाह की उपमाँ में केशो भाट ने यह दोहा कहा जो शहीद बिलास भहाई मणी सिंह पुसतक के पन्ना 23 पे अंकित है:-"धन पाराँ देई गराँबनी, पूत जन्मआ निगाहीआ, पाँव सै हाड़ी मार भगाऐ। गुरू की लोथ उठाऐ लिआनी, जश जग में पाएिआ, पिता पूत रौशन भऐ आऐै। जश गाउुँ तउु लखीऐ गोधू ठाकर का, ताजी बन्दे बार, उूँठों बैलों की सोहे लार, बराहमन भाटों को दिया दान, बेल तेरी को गुरू बधाऐ। जश जोड़ केशो भाट भनिया, साल सत्राँ सै अठतीआँ रकाब गंज के मलहान, कगँनों की जोड़ी, मोहरों की माला भटों को पहिनाऐ। (शहीद बिलास भहाई मणी सिंह पान्ना 23)

एस बारे में भाट वही यादोबन्सी बड़तीआँ की मैं भी भाई लखी शाह जी तथा उुनके पुत्र कैसे सतिगुरू जी का पवित्र पार्थिक शरीर चाँदनी चौक से उुठा कर लाऐ, का र्वनण भाई केशो भाट ने इस दोहे मैं कहा है:-

चला चलाई हो रही, गड़ गड़ उुखरे मेख।
लखी निगाहीआ ले गऐ,तू खड़ा तमाछा देख।
लखी निगाहीआ लख गऐ, हेम अड़ाउो आठ।।
साथ सरीका लख गऐ, बहुर ना आएि ईस बाट ।
धन्न पाराँ देई गराबनी, पूत जनमिआ नगाहीआ।।
पाँच सौ हावी मार भगाऐ, गुरू की लौथ उुठाऐ लिआनी।
जस जग मैं पाएिआ, पिता पूत रौशन भऐ आऐ।।
(जीवान भाई लखी शाह वानजारा (राजपूत)
पन्ना 66, लिखत भाई रणधीर सिंह सन्भल)

भाई लखी शाह बनजारा तथा भाई जैता जी की दिलेरी के बारे किसी ने लिखा है:

चड़ी हन्देरी काली बोली औरन्गे जुलम कमायआ।।
अपनी हैंकड़ रखण खातर, नौवाँ नानक कतल कराएिआ।।
हिंमत सिख की परखण वाला सम्य आण बनाएिआ।।
लखी शाह ते जैते ने, जरा देर ना कीती,
सिर धड़ को चाँदनी चौक से, सही जगहा पहुचाएिआ।।

सिख इतिहास मैं जब भी विकट सम्य आया तो गोआर राजपूतौं ने गुरु घर की सेवा शरधा के साथ की। जब श्री गुरू हरिकरिशन साहिब जी दिळली में अपना अन्त सम्य देख कर सन्गत को गुरू घर की नोवी जौत के लिऐ इशारा करते बोले, 'गुरू बाबा बकाले' व जोती जोत समा गऐ। उुस सम्य बाबा बकाला में अनेकों पाखंड़ी गुरू बन कर बैठ गये तथा सिख संगत परेशान तथा दुबधा मैं पड़ गई कि किस के गुरू माने। इस संकट की घड़ी मैं बाबा मखण शाह जी ने नावैं गुरू जी के र्दशन करने के बाद कोठे की छत पे जा कर जोर जोर से कहा, "गुरू लाधौ रे... गुरू लाधौ रे" व पाखंड़ी गुरूओं का परदा फाश कीआ जिस के बारे कवी ने खुब लिखा है;-

ऐक शाह ने गुरू को जग में इंज परकटायआ।
कोठे पे चड़ के गुरू लाधो रे गुरू लाधो रे का शोर मचायआँ।।
दूजे शाह ने दिळली में गुरू धड़ को लोकायआ।
अपणे घर के आग लगा कर, गुरू धड़ का सन्सकार कराएिआ।।
उुस शाह ने भी अपणा र्फज निभाएिआ, इस शाह ने भी अपणा र्फज निभाएिआ।।

भाई लखी शाह एक धनाड विउपारी था जिस के पास हजारों बैल तथा उूँठ थे ओर सिख इतिहास में उन्हें लखी शाह कहते थे। उुन के बारे कहा जाता है कि जहाँ उुन का काफला रुकता था, वहाँ नई बावड़ी (पानी निकालने का पुरातन सरोत) बना कर काफलों के लिए पानी का इनतजाम किया जाता था। बाबा लखी शाह ने अपने विउोपार मार्ग मैं रुकने के लिऐ अनेक सराऐै भी बनवाई थी जिन में से एक सराऐ जिळला पटिआला, पंजाब में राजपुरा के नजदीक 'सराऐ बनजारा' के नाम से बनी हुइ आज भी मोजूद है, जिस मैं अभी भी सराऐ का ऐक दरवजा अपनी धरोहक की गाथा बता रहा है। वहाँ एक सुख दवार / डिउोड़ी नुमाँ का खन्डर भी है जिस के पास अभी भी तलाब की सीड़ीआँ नजर आतीं हैं तथा दौ तीन ऐकड़ के तलाब के अवशेश जगह जगह नजर आते हैं, जिन में गाओं के किसान खेती कर रहे हैं। गाँव के बड़े बर्जुगों से पूछने से पता चला कि यह सराऐ लखी शहि वनजारा जी की बनाइ हुइ ही है। यह सराऐ पुराने वयोपारक मार्ग 'दिळली - लाहोर मार्ग' पे है। भाई लखी शाह के नाम पे अगरोहा मैं भी एक बड़ा तालब है। (अग्रसैन अह्रोहा अग्रवाल लिखत डा. सवराजयमणि अगरवाल अैम. ऐ. पी.ऐच.डी पन्ना 57) रामपुरा फूल के रेलवे सटेशन से कोई डेड - दो मील पे उुत्र पचछम की ओर एक माड़ी की जगा है जिस को भुलर गौत्र के चौधरी की जगहा कहते हैं। यहाँ पे एक पक्का कूआँ है जिसे लोग 'लखी बनजारे का कुआँ' कहते हैं। (बाबा आला सिंह भाई करम सिंह हिसटोरीअन पन्ना - 19) वयपार करने के साथ साथ बाबा लखी शाह गुरूघर के अन्नय सेवक भी थे। बाबा लखी शाह ने उुस सम्य जगह खरीद कर रसीना गाँव बसाया तथा वहीं पे रहे। भट वहीओं के अनूसार - बाबा लखी राऐ जेठ सुदी इकादसी सम्बत 1737 (1680 ई:) को रसीना गाँव (रकाब गन्ज) में गुरू चरणों में जा बिराजे। भाट वही अटेला, परगणा कैथल में लिखा है:-"लखी राऐ बेटा गोधू का पोता ठाकर दास का बँस प्रशोतम का चन्द्रबँसी यादव गोत्र, बड़तीआ कनाउुँत साल सतराँ सै सैंतीस, जेठ सुदी इकादसी, रकाब गन्ज के मलहान दिळली नगरी, गाव रसीना, सवा पहिर दिँहु चड़े

प्रलोक पिआना किया" (गुरू की साखीआँ पन्ना 25) केशो भाट ने उस सम्य यह दोहा कहा था:- "सिमर भाट तउुसतिगुर अपना, धनधगला गड़धारा। हुकम हुआ सचे साहिब का, लखी बड़तीआ सर्वग सिधारा। आठो बेटे हूऐ इकठे, काज करन की बारा। निगाहीआ, हेमां, हाड़ी आऐ, आया सीतू ते पुन्डारा। बकशी बाला जवाहर आऐ, बन्धे बर्छी कमर कटारा। मँहिंगे मोल उूँठ मँगाऐ, चड़ने को धोड़े कानों में बारा। नगाहीआ सिर पाग बन्धाई, बँस ठाकर का भया उुजिआरा। जस जोड़ केसो भाट भनिआ, साल सत्राँ सै अठतीआ 'रकाब गँज के मलहान; कन्गनों की जोड़ी, मोहरों की माला, भाटों को पहिनाई। (भाट वही यादों बँसी बड़तीआँ की तथा शहीद बिलास भाई मणी सिहं पन्ना - 23) इस दोहे से पता चलता हे के बाबा लखी शाह के सर्वग सिधारने के सम्य बाबा लखी शाह के बेटे भी धनाढ थे तथा मँहिंगे मोल के उूँठ व धोड़े रखते थे व दानी भी थे जो कुल भाट को कन्गनो की जोड़ी तथा मोहरौं की माला पहिनाते हैं। बाबा लखी शाह के बेटे धनाड व गुरूघर के भी अन्नय सेवक थे। जब गुरूगोबिन्द सिंह जी ने अर्मित तैयार किया तथा खालसा कोम की नीव रखी उुस सम्य बाबा लखी शाह जी के सात बेटे भी अर्मितपान कर सिंह सजे ओर अन्नदपुर की लड़ाईओं में भी हिसा लेते रहे। जवाहर सिंह बेटा बाबा लखी शाह 30 अप्रल 1700 को अन्नदपुर साहिब मैं फतिहगड़ के बाहर हुई लढाई मैं शहीद हुआ। भाँठ वही यादों बँसी बड़तीआँ की खाता बड़तीऐ कनाउोतौं का मैं ईस के बारे लिखा है:-

"जवाहर सिंह बेटा लखीऐ का, पोता गोधू का बड़तीआ कनाव...सालसतरह सै सतवन्जा, भादवा प्रविशटे तीस गुरूवार के दिहौं गुरू का बचन पाऐ किला फतिहगड़, परगना सहोटा के मलहान सामैं माथे जूझ कर मरा, आगे गुरू भाणे का खाविन्द। गुरू की गत गुरू जाने।....."

बाबा लखी राऐ का दूसरा बेटा भाई हैम सिंह 16 जनवरी 1704 को अन्नदपुर की लड़ाई में शहीद हुऐ। बाबा लखी राऐ का सब से बड़ा बेटा निगाहीआ सिंह 6 अपरैल 1709 को सामे माथे जूझ कर शहीद हुआ। जिस के बारे भाट वही यादों बँसी बड़तीआँ की में लिखा है:-

"निगाहीआ सिंह बेटा लखीऐ का, पोता गोधू का पड़पोता ठाकर दास का चन्द्र बन्सी, अत्रिस, यादवबन्सी कुल परशोतमदास का, बड़तीआ कनाउोत समत सतरए सै छिआसठ, बिसाख प्रविशट नावीं गुरूचक के मलहान रण मैं सामैं माथे जूझ कर मरा..." (गुरू के शेर पन्ना - 240, डा. हरजिन्दर सिंह दिलगीर)

भाई लखी शाह / राऐ जी की असतीआँ हरिदवार गंगा में जल परवाह की गइ जिस के बारे पंडा वही खेम चन्द चुनी लाल हरिदवार में लिखा है:-" निगाहीआ, हेमां, हाड़ी, सीतू, पुन्डारा, बखशी, बाला तथा जवाहर बेटे लखी राऐ पोते गोधू के पड़पोते ठाकर दास के चन्द्रबँसी, उुलाद प्रशोतम की बड़तीआ कनाउुँत साल सतराँ सै अठतीस, भादव मास की अमावस के दिहुँ नगाहीआ गंगा जी आया, फूल पिता लखी राऐ के ले कर साथ हेमचन्द आया, साथ माता कन्तो आई" (गुरू की साखीआँ पन्ना - 26)

बाबा लखी शाह बन्जारा जी को बन्जारा नाम से सारा सिख जगत जानता है मगर यह केवल गौआर समाज ही जानता है कि बाबा लखी शाह बन्जारा जी गोआर राजपूत समाज की बड़तीआ गोत्र से हैं। भाट वहीओं में भी यादोवन्सी बड़तीआ कनाउोत लिखा है जौ गौआर समाज में आज भी मुखया गोत्र से है। भाई रणधीर सिंह सन्भल जी ने जीवान भाई लखी शाह वानजारा (राजपूत) में जगा जगा बाबा लखी शाह को लुबाना लिखा है तथा बहुत सारे दुसरे लेखकौं के हवाले दिऐ हैं जो बाबा लखी शाह को लुबाना लिखते हैं। किताब के पन्ना 66 पे सन्भल जी लुबानों के 11 गोत्र लिखते है : कुन्दलस, सुन्दलस, बाशक, वशिशट, लसलस, कशप, अतरीलस, भरूत, कोशल तथा कौलछ इन दीऐ गोत्र में कहीं भी बड़तीआ गोत्र नहीं है। जब भाई सन्भल जी भाट वही बड़तीऔं का हवाला देते है।... गौआर राजपूत समाज के अलग अलग नाम जेसे बनजारा, सिरकीबन्द, वाणवट, मथरा बनजारे, भाट बनजारे, लुबाना, नट, भागवताँ, काकनीआ, काकसरीआ, लावाना, गावारीआ, गामलीआ, बाजीगर आदि हैं। मगर यह बड़तीआ गोत्र सिरफ गोर/ गोआर बनजारौं तथा गौआर / गोर बाजीगरौं के मुख गोत्रों में ही है। इस लिय बाबा लखी शाह जी को अनजाने में या अपने फाइदे के लिये लुबाना लिखना गलत ही नहीं बलकि उुन से नाइनसाफी भी होगी।

धन है बाबा लखी शाह बन्जारा व उन के वंशज, धन है साहिब गुरू गोबिन्द सिंह जी की सिखी व गुरू जी के सिख। अब सोचो आज के सिख कैसे हैं? बाबा लखी शाह ने अपने घर को आग लगा कर गुरू तेगबहादर जी के पवित्र पार्थक शरीर का दाह सँसकार किया। रसीना गाँव बाबा लखी शाह का था जहाँ आज गुरूदवारा रकाबगंज साहिब मोजुद हें। समझ नहीं आता बाबा जी का घर ना जाने कैसे सिरफ घोड़ों के तबेला में तवदील कर दीआ गया जो नाम रकाबगंज बना लिआ गया। जब सिख सरदार जसा सिंह ने दिळली के लाल किळले पर केसरी निशान फैराया व सिख गुरूओ की जादगारों पे गुरूदवारा साहिब का निरमाण कीया। भाई लखी शाह एक धनाड वयपारी बड़तीआ कनाउुँत गोत्र के गोआर राजपूत बनजार थे। भाई लखी शाह रासीना गाँव का मालिक था तथा आज गोआर बनजारा राजपूत समाज को उन के पूरवजों की जगाह रात्रि को रुकने की जगाह नहीं। दिळली सिख गुरदवारा प्रबन्धक कमेटी ने अपनी आमदन बड़ाने के नाम पे, ऐशो अराम के लिऐ वातानकूल कमरे बना भारी किराया निरधारित कर दिया है जो जाएज नहीं तथा बनजारा समाज के लोगों को देना मुशकल है। सिख कोम भाई लखी शाह को भूल गई ओर उुसके घर पे जो गूरूदवारा साहिब नावें गुरू साहिब जी की याद में बनाया है उस का नाम रकाबगँज रखा जाना कैसे

जाइज है? जथा बाबा लखी शाह जी की याद मे बहाँ पर इक इमारत तो कया इक कमरा तक नहीं बनाया गया कयु? दिळली में अकबर रोड है मगर अफसोस भाई लखी शाह के नाम पे कोई रोड जा चौक, इमारत, मोहला, तथा कोइ भी यादगार कयू न है? अगर बाबा लखी शाह गुरु करिपा से अपने कुनबे (बेटे नगाहीआ, हाड़ी, हेमां तथा नाइक, धूमां बेटा काने का तोमर बिंजलोत आदि के साथ मिल कर गुरु तेगबहादर जी की शहीदी की जगहा पे ना पहोंचते आज जो मान बाबा जैता जी (जीवन सिंह – रंगरेटा गुरु का बेटा) को मिला है ना मिलता। यह गुरू के सिख तो पहिले ही दिळली में थे तथा एनहों ने गुरु तेगबहादर साहिब जी की शहीदी अपने आँखों से देखी थी (इसी लिऐ बाबा जैता जी ने गुरु गोबिन्द राऐ जी से कहा था, कि गुरु तेगबहादर साहिब जी की शहीदी के सम्य वहां कई सिख थे मगर ओरंगजेब के ड़र से कोई भी सिख आगे नहीं आया तथा बाबा जैता जी के घर में ही विचार करते रहे। जब इने बाबा लखी शाह बनजारा के आने की सूचना मिली, बाबा जैता जी तथा दूसरे सिख बाबा लखी शाह जी को मिलै तथा शहीदी की सारी बात बताई। बाबा लखी शाह बनजारा जी गुरु जी के अनन सेवक थे तथा एक पल भी सोचे बिना तुरन्त सेवा के लिऐ उठ खवे हुऐ और जालिम ओरंगजेब की फौजौं के सखत पहिरे में सें भी गुरू तेगबहादर साहिब जी का पार्थक शरीर (बेटे नगाहीआ, हाड़ी, हेमां तथा नाइक धूमां बेटा काने का तोमर बिंजलोत आदि के साथ मिल कर) उठा ले गऐ तथा गरू जी का पवित्र शीश अन्नद पुर ले जाने के लिये बाबा जैता जी तथा साथीओं को सोंप दिया। बाबा लखी शाह बन्जारा ने गुरू तेगबहादर साहिब जी के पार्थक शरीर का, अपने गाँव रसीना मे आदर साहित अपने घर को आग लगा सन्सकार कर दिया। खुशी की बात है कि आज शरोमणी गुरूदवारा परबंदक कमेटी तथा सिख जगत भाई जैता (बाबा जीवन सिंह) जी का तो पुरब मनाती हैं मगर अपसोस बाबा लखी शाह बन्जारा जी की कुरबानी को आंखों से ओजल कर दीआ गया है कयू? कया बह किसी समान के हकदार ना है? इतना ही नहीं बाबा लखी शाह बन्जारा जी के वारस गोआर राजपूत समाज वाले भी कयों खामोश हैं?

-000-

कसरत करें सेहत बनाऐं, रोगों को दूर भगाऐं !

भारतीय हैंड़ो फैड़रेशन, प्रधान : सोखविंदर सिंह बिंजरौत
मो: 78764 26226 एवम E. Mail: ssbarjot@gmail.com

SULTAN ACADEMY
PILI KOTHI, JAWAHAR NAGAR,MANDI DABWALI, HARYANA
MRS. PARAMJIT KAUR, COACH MOB: 09855480776 & 7876426226

' *गोआर समाज का धर्म* '

कोई भी समाज धर्म के बिना विकसित नही हो सकता है। धर्म में मानव मन की शान्ति की तलाश करता है। अगर समाज को सही गुरू मिल जाये तो समाज के लोग अपने आप को सुरक्षित समझते है। यह धर्म ही है जो आदमी को उसकी दशा और दिशा बताता है। धर्महीन व्यक्ति दिशाहीन होता है तथा भटकता फिरता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका मालिक अथवा गुरू शक्ति–शाली हो। धर्मिक गुरू की शरण में व्यक्ति अपने आप को ज्यादा सुरक्षित महसूस करता है। इतिहास उठाकर देखा जा सकता है जहॉ लोग धार्मिक नही वहां दिशाहीन होते है। इसीलिए धर्म समाज को एक सूत्र में बांधने का काम करता है।

यह एक विडम्बना है कि गौर/गोआर समाज जो भिन्न–भिन्न वर्गों में बंटा है, कोई एक धर्म, धार्मिक गुरू नजर नही आता है। आदिकाल से इन्सान किसी ना किसी धर्म से जुडा हुआ है और उसकी कोई न कोई पूजा–विधि का अनुशरण करता आ रहा है। गौर/गोआर समाज सम्पूर्ण भारत में है तथा भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता है। गौर/गोआर समाज ने हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाइ व सिक्ख धर्म ग्रहण कर रखे है। परन्तु यह यकीन के साथ नही कहा जा सकता कि गौर/गोआर समाज का अपना धर्म क्या था? एवं इनका ईष्टदेव कौन था। इससे पहले हम गौर–धर्म पर विचार करें कि धर्म क्या है। धर्म की सही परिभाषा करना कठिन है। फिर भी सरल भाषा में धर्म आलौकिक, विश्वास को नियन्त्रित करने वाली आशक्तियों की पूजा में विश्वास करना ही धर्म कहलाता है। सरल शब्दों में परमात्मा को प्राप्त करने एवं आवागमन से मुक्ति के तरीके में विश्वास, आलौकिक शक्तियों की पूजा में विश्वास करना तथा आलौकिक शक्तियों को विश्व को पैदा करने तथा विश्व का संहार करने वाला मानना, धार्मिक चिन्हों में विश्वास रखना एवं बताये गये धार्मिक उसूलों पर चलते परमात्मा की खोज में यकीन करना ही धर्म कहलाता है।

अगर हम अलग–अलग धर्मो का अध्ययन करें तो एक बात सभी धर्मो में मिलती है कि सभी धर्मो का विश्वास है कि कोई एक आलौकिक शक्ति है जिसको हम परमात्मा, रब, अल्लाह, भगवान एवं गोड कहते है। सृष्टि की उत्पत्ति की है एवं वो ही उसका विनाश करते है। प्रत्येक धर्म का एक पवित्र ग्रन्थ होता है। जैसे हिन्दू धर्म में वेद, उपनिषद, सूत्र, पुराण, उपपुराण, रामायण, महाभारत, गीता इसी प्रकार ईसाइ धर्म में बाईबल, मुस्लिम धर्म में कुरान एवं सिक्ख धर्म में गुरुग्रन्थ साहिबजी है। इन सभी धर्मो के कुछ नियम एवं बंदिशें हैं जिनको मानना ही धर्म है।

इसी संदर्भ में हम देखेंगे कि क्या गौर/गोआर समाज में ऐसी कोई आलौकिक शक्ति है जिसको समस्त गौर/गोआर समाज मानता है। इससे पहले हमें गौर/गोआर समाज में प्रचलित गौर/गोआर समाज की उत्पत्ति के सिद्धान्तों पर विचार करना होगा।

वाई रूपला नाईक ने अपनी पुस्तक *''कलरफुल बंजारा थ्रू दी एजिस''* में गौर/गोआर समाज की उत्पत्ति श्रीकृष्ण भगवान एवं उनकी प्यारी गोपिका राधा तथा मोला के दत्तक पुत्रों राठौड, परमार चौहानों से होना लिखता है। इस प्रकार गौर/गोआर समाज का ईष्टदेव श्रीकृष्ण जी को कहा जा सकता है। लेकिन श्री वाई०रूपला नाईक के इस सिद्धान्त पर विश्वास करना कठिन है।

1–अगर हम इतिहास पर नजर डालें तो मोला नाम का कोई गौ–पालक नही हुआ है।

2–श्री वाई०रूपला नाईक का विचार भी आधारहीन है कि श्रीकृष्ण भगवान एवं उनकी प्यारी गोपिका राधा ने राजपूत राजों सें तीन राजकुमार मांगे जो उन्होंने सहर्ष दे दिये। इन मांगे हुए राजकुमारो राठौर, परमार, चौहान जिनका लालन–पालन राधा तथा मौला ने किया, कहा गया है उनसे आगे चलकर गौर/गोआर समाज का विस्तार हुआ है।

3–अगर हम इतिहास पर नजर डालें तो पता चलता है कि महाभारत के समय तक राजपूत शब्द का प्रयोग नहीं था। टीवी पर प्रसारित महाभारत सीरीयल के संवादों को ध्यान से सुनें तो पता चलता है कि कौरव–पांडवो के लिए आर्यपुत्र शब्द का प्रयोग हुआ है न कि राजपुत्र शब्द का।

यहॉ यह बताना जरुरी हैं कि किशन कौतनिया के अनुसार श्रीकृष्ण जी गौर वंश से है। इसलिए यह कहना गलत नही है कि श्रीकृष्ण जी से पहले गौर वंश चल रहा था जिस में श्रीकृष्ण जी ने जन्म लिया। मगर यह भी सच है कि आज गौर/गोअर समाज में श्रीकृष्ण जी की पूजा अधिक होती है। इस समाज ने श्रीकृष्ण जी के कई मन्दिर बनवाये है। यदि हम इसको धर्म के नजरियें से देंखे तो लगता हें कि गौर/गोअर समाज का आराध्य देव श्रीकृष्ण जी ही है। क्षत्रीय होने से गौर/गोअर समाज की कुल देवी मां काली है। स्वामी गोकुलदास के अनुसार गौर/गोअर समाज की उत्पत्ति शिवजी के पांच गणों से हुई है। स्वामी गोकुलदास जी भले इस समाज से नही थे मगर उन्होने अपने विचारों से यह जरूर बताने की कोशिस की है कि गौर/गोअर समाज का धर्म शिव था तथा शिव की ही पूजा करते थे। अपने विचार को स्पष्ट करने के

लिए स्वामी गोकुलदास जी बंजारा भास्कर के पेज नम्बर 8 पर जो रीति–रिवाज इस समाज में अभी भी प्रचलित हैं। उन पर विचार करने से पता चलता है कि गौर/गोअर समाज गोसाई जिसे शिव भी कहते हैं, अपना गुरु मानते हैं। अगर कोई समाज गुरु के नियमों को मानता है उन नियमों को मानना ही धर्म कहा जा सकता है। स्वामी गोकुलदास जी इसके समर्थन में निम्न तथ्य प्रस्तुत करते है।

1–बंजारा पुरूष को गौर और बंजारा स्त्री को गोरनी/गोआरनी कहा जाता है, यह भगवान शिव की प्यारी गौरां की ओर संकेत करता है। तथा यह भी सच है कि किसी अन्य समाज में पुरूष को गौर/गोआर तथा औरत को गौरनी/गोआरनी नही कहा जाता है।

2–बंजारा समाज का बैलों की पीठ पर माल लाद कर व्यापार करना शिव के प्यारे नन्दी की इस समाज को भेंट माना जाता है।

3–बंजारा समाज में सास दूल्हे की चोटी पर जल डाल कर चरणामृत पीती है। गंगा भगवान शिव की जटा से निकली थी, दूल्हे को शिव का रूप समझ कर चोटी पीने का रिवाज भी बंजारों का भगवान शिव और गौरां से सम्बंध होना प्रतीत होता है।

इस तरह स्वामी गोकुलदास जी गौर/गोआर समाज की उत्पत्ति भगवान शिव के पांच गणों से हुई मानते हैं तथा गोसाई जिसे शिव भी कहा जाता है बंजारों का ईष्ट देव है।

अगर हम गौर/गोआर समाज के इतिहास की ओर नजर करते हैं तो एक बात साफ हो जाती है कि यह समाज भिन्न–भिन्न काम करता था तथा काम के नाम से ही भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता था। जैसे सिरकी बन्द, बाणबट, गंवारिया, कंघीवाला, बादी, बाजीगर, बणजारा, सुगाली, ढालिया, मथुरिया, सुनार बंजारा आदि। यह सभी नाम किसी न किसी काम से जुडे हुए हैं। यह नाम लोगों ने हमे दिये है हम अपने आप में गौर/गोआर नाम से आपस में पुकारते हैं। दक्षिण के बंजारे आपस में गौर माटी शब्द का प्रयोग करते है, उत्तर भारत में गोआर शब्द का प्रयोग होता है। गौर/गोआर समाज काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और बंगाल से लेकर काबुल कंधार होते हुये रोम, मास्को व सेन्टपिट्सबर्ग तक फैला हुआ है। अफगानिस्तान में गौर नामक प्रदेश है इस प्रदेश पर गौर/गोआर समाज का शासन था। दसवीं सदी में इस्लाम के आगमन के कारण गौर/गोआर समाज सिन्धुपार कर मारवाड में आ बसा। गौर/गोआर

समाज को भारत में बंजारा ईग्लैण्ड में रोमा, रूस में जिप्सी कहा जाता है।

श्री पी.एस.सदार ने अपनी वैज्ञानिक तरीके की खोज में लिखते है कि पांच हजार वर्ष पूर्व वैदिक काल में सिन्धु–घाटी सभ्यता मुअन–जो–दडो व हडप्पा की खुदाई में मिले सबूतों को ध्यान से जांचने पर पता चलता है कि बंजारा को उस युग में पणी कहा जाता था। पणी अपना व्यापार समुद्र में जहाजों से और जमीन पर बैलों की पीठ पर माल लादकर करते थे। सिन्धु सभ्यता के उजड जाने के बाद गौर/गोआर समाज पंजाब, राजस्थान से होते हुए सारे भारत में फैल गये।

हमारे समाज के खास करके गोर बंजारा के विद्वान गोर घर्म कहते हैं तथा ईस को सबसे पुराण घर्म मानते हैं मगर यह विद्वान भूल जाते हैं कि प्रतेक घर्म का कोई ईष्टदेव होता है तथा पूजा विद्धी होती है। बंजारा के विद्वान ना तो ईष्टदेव के बारे बताते हैं तथा ना ही पूजा विद्धी के बारे बताते हैं। यह विद्धान मानते हैं कि मुअन–जो–दडो व हडप्पा सब से पुराणी सभ्यता है तथा यह सभ्यता हमारी है। मेरा मान्ना है श्री पी.एस.सदार के मत अनूसार पणी, जिस को बंजारा भी लिखा है मुअन–जो–दडो व हडप्पा की अबादी का हिसा थे। मुअन–जो–दडो व हडप्पा की सभ्यता मैं कहीं भी गोर घर्म का र्वनण नही है। श्री पी.एस.सदार के अनुसार मुअन–जो–दडो व हडप्पा की खुदाई मे मिली धार्मिक मूर्तियों के अघार हम गोर घर्म को सम्झने की कोश्सि करतें हैं।

मुअन–जो–दडो व हडप्पा की खुदाई मे मिली धार्मिक मूर्तियां जिन में शिवजी को छः आखों व तीन मुख का दिखाया गया है सम्भवत ब्रह्मा ही हो सकता है तथा सिर पर सींगों का

टोप पहने दिखाई देती है। यह मूर्तियां सिन्धु घाटी के आराध्य देवों की है। श्री वी.एस.सदार की खोज के पेज नम्बर 215 पर दिये गये मानचित्र में दर्शाया गया है कि सिन्धुवासी शिव की पूजा करते थे। यह भी सच है कि इस सभ्यतों कोई मन्दिर नही मिला है।

अगर हम गौर/गोअर समाज को ध्यान से देखें तो साफ लगता है कि गौर/गोअर समाज भी मन्दिर में पूजा नही करते हैं तथा त्यौहार के समय मिट्टी या आटे की मूर्तियां बनाकर पूजा करते हैं, पूजा समाप्त होने पर इन मूर्तियों को जल में विसर्जित कर दिया करते है। सिन्धु सभ्यता के उजड जाने के बाद बंजारों ने एक जगह पर बसने का विचार ही त्याग दिया था और घुम्मकड जीवन जीने लग गये। घुम्मकड जीवन में मन्दिरों में पूजा करना सम्भव नही था।

सिन्धु सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक है श्री पुरूषोत्तम एवं श्रीराम सदार के मतानुसार मुअन–जो–दडो व हडप्पा की खुदाई में मिले अवशेषों से पता चलता है कि गौर/गोआर जिनको श्री सदार ने बणजारा लिखा है इस सभ्याता का हिस्सा थे। पेज नम्बर 75 पर लिखा है भगवान शिव दक्षिण में श्रीलंका तक पूज्यनीय थे और सिन्धु नगरों में जोगेश्वर थे। पेज 98 पर लिखा है ''सिन्धु लोग शिव के भक्त थे शिव का वाहन नन्दी था इसलिए भक्तों ने बैलों के सींग अपने सिर पर चढा लिए होंगे''

नवम्बर 2013 के चुनावों का विश्लेषण दूरदर्शन पर देख रहा था तब दन्तिवाडा–छत्तीसगढ के क्षेत्रों को दिखाया जा रहा था उस समय एक बूत दिखा जिसके सिर पर सींगो वाला टोप लगा था। इससे सिन्धु सभ्यता के सीगों वाली मूर्ति की पुष्टि हो गई।

सिन्धु घाटी के लोग शिव की प्रत्येक वस्तु से भक्तिवश प्यार करते थे। शिव के गले में लिपटे सर्प का प्यार दिखाने के लिए सिन्धु घाटी के लोग अपनी जिव्हा को सर्प की तरह दो भागों में चिरवा लिया करते थे। इसलिए इन्हे नागवंशी भी कहा जाता था। श्री पुरूषोत्तम श्रीराम सदार की खोज के अनुसार आज भी कई जगह पर गौर/गोआर जिन को श्री सदार ने बणजारा लिखा है। अपनी जिव्हा को दो भागों में बांटने के लिए स्वर्ण सूई से निशान लगाते है। श्री पुरूषोत्तम श्रीराम सदार पेज नम्बर 103 पर लिखते हैं कि ''बंजारों में खासकर मथुरा के मथुरिया बंजारों में जीभ को सोने की गरम छडी से काटने की प्रथा है।'' इसलिये आर्यो ने शत्रु को मृघ्रवाचा कहा है। श्री सदार इसी पन्ने पर आगे लिखते है, आर्य जिन लोगों को दास कहते थे वे वास्तव में नाग–वंशी लोग थे। नाग से रिश्ता बताने के जिए वे अपनी जीभ को विभाजित करते थे। बंजारों में यह रिवाज है कि नाग–वंश में शामिल करने के लिए केवल लडके की जीभ को सोने की गरम छडी से काट कर नाग के समान दो जीभ वाला बनाना चाहिये। मध्यप्रदेश के निवार जिले में तथा मथुरा के मथुरिया बंजारों में यह प्रथा सन् 1947 तक प्रचलित थी, शायद आज भी प्रचलित हो।

भले ही श्री सदार ने सिन्धु–घाटी के विषय में अच्छी खोज की हैं, मगर वे भी उनके धर्म के बारे में विस्तार से बताने में असफल रहे हैं। खुदाई में मिली वस्तुओं के आधार पर भी हम सिन्धु लोगों के धर्म के बारे में ठीक से नही कह सकते हैं। यह आम बात है कि व्यक्ति जिससे डरता है उसी को पूजता है इसीलिए सिन्धु लोगों में हवा, पानी तथा अग्नि की पूजा का प्रचलन था। उत्खनन में मिली शिव व दूसरे देवी–देवताओं की मूर्ती के आधार पर हम कह सकते हैं कि वे लोग मातृ–देवी, लिंग–पूजा, योनि–पूजा, वृक्ष, अग्नि तथा स्वास्तिक की पूजा करते थे तथा शिव की उपासना करते थे।

सिन्धु निवासी मृत्यु पर्यन्त योग–समाधि में विश्वास रखते थे। इन सभी उपासनाओं तथा पूजा से हम कह सकते हैं कि सिन्धु संस्कृति में भी कुछ हद तक हिन्दू–धर्म की पूजा होती थीं। डाक्टर

एस.आर.गोयल कहना पूर्णतया ठीक है कि सिन्धु–घाटी सभ्यता की खोज ने भारत के धर्म के इतिहास में हमारे दृष्टिकोण में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया क्योंकि अब यह निश्चित है कि हिन्दू–धर्म में प्रचलित कुछ मौलिक विश्वासों तथा कुछ प्राचीन विश्वासों का सम्बंन्ध पूर्व आर्य संस्कृति से था।

अब अगर हम उपरोक्त सन्दर्भ में गौर/गोआर धर्म के बारे में विचार करें तो यह कहा जा सकता है कि गौर/गोआर समाज का धर्म, हिन्दू–धर्म से अलग नही था। सिन्धु सभ्यता से लेकर आज तक दूसरे समाज की भांति शिव–शक्ति के पुजारी थे। स्वामी गोकुलदास जी *''बंजारा भास्कर''*के पन्ना नम्बर 108 पर लिखा है कि ''हिन्दुओं के तमाम देवी–देवता व तीर्थ–स्थानों को उसी प्रकार मानते है जिस तरह अन्य हिन्दू लोग मानते हैं। इसके अतिरिक्त महरमा–माता, मिट्ठू भूकिया, संत सेवालाल महाराज, बंजारी–माता, बाबा रामदेव रूणिचा, गुसांई जी, श्री गुरू नानक देवजी आदि को सामाजिक तौर पर विषेश तौर पर मानते और पूजते हैं।'' मगर सभी गौर/गोआर समाज श्री गुरू नानक देवजी को मानते हैं भले ही उनको सिक्ख–धर्म की पूजा विधि आती हो अथवा नही आती हो। प्रत्येक शुभकर्म की शुरूआत श्री गुरू नानकदेवजी महाराज की अरदास से शुरू करते हैं। हम स्वामी गोकुलदास जी के विचारों से सहमत है कि गौर/गोआर हिन्दू–धर्म के देवी–देवताओं की पूजा करता है इसलिए हिन्दू ही कहा जायेगा इनका अलग से कोई धर्मनही
है।

कसरत करें सेहत बनाऐं, रोगों को दूर भगाऐं !

भारतीय हैंड्रो फैड़रेशन, प्रथान : सोखविंदर सिंह बिंजरौत
मो: 78764 26226 एवम E. Mail: ssbarjot@gmail.com

SULTAN ACADEMY
PILI KOTHI, JAWAHAR NAGAR,MANDI DABWALI, HARYANA
MRS. PARAMJIT KAUR, COACH MOB: 09855480776 & 7876426226

शबद जो हमे जोड़ता है – गोआर / गौर

जब बनजारा, लुबाना. सुगाली, सिरकी बन्द, बाण वट बाजीगर पंजाब में खुद को गोआर / गौर कहते है तो ही एक लगते हैं मगर इन सभी के लिये इन के नाम सिरफ एक वयोपार का धंधा ही वन कर रह गये है। लोगों ने इने पणीए / बनिया व बकावल तथा वंजारा भी इसतेमाल किया। इन में से किसी ने नमक का धंधा किया तो लोगों ने उुसे लुवाना कहा, वाण बनाने वाले को वाण बट, सिरकी बनानो वाले को सिरकी बंद, बाजी ड़ालने वाले को बाजीगर यानी सभी को लोगों ने उुन के काम के साथ ही नाम दे कर बुलाया जाना शुरू किया मगर यह लोग खुद को गोआर / गोर ही बुलाते । यह तो होता ही है कि हर इक इसांन अपने आप कूछ काम तो करता ही है जो पेशा होता है ना कि जाती व गोत्र । गाँवो में चूड़ीआँ बेचने वालों को लोग वंजारा कहते है। हमारे विदवान बंजारा उुसे कहते हैं जो बैल पर समान लाद कर वयापार / वित्रण करता था मगर यह काम भी केवल धनाड बंजारे (जिन के पास हजारों, लाखों बैल होते थे) ही करते थे, न कि सभी गौआर / गौर । गोआर राजपूतों में से जंगी, भंगी, लखी शाह, राय सिंह व संत बाबा सेवा लाल अपने काफिलों संग दूर दराज तक जा कर सामान बेचते थे। मखन शाह व फुलानी संत धनाड़ गोआर वंजारों ने तो कुछ कमजोर व छोटे राजाओं व जागीरदारों को हरा कर अपने अलग राजय बनाए व अपनी सखत मेहनत से अपने साथीओं को वयपार में जमाया जो एक काम ही है जैसे खेती, लोहारा, सुनारा, कुमहारा आदि कारय हैं। मनू ने चार वरणों ब्राहमण, क्षत्रिय, वैशय व शूद का विवरण कीआ है जिन में से गोआर बरादरी दो में, कयों कि हम क्षत्रिय तथा वैशय में आते हैं। जब वयपार करते तो वैशय ओर जब तलवार ले कर अपने सामान की रक्षा करते हैं तो क्षत्रिय कहलाते हैं। महाँभारत का युध कौरवों व पाँड़वों के वीच हुआ तथा पाँड़वों का नेत्रव करने वाले भगवान कृशण जी को जगह जगह गोपाल, गोआर सवामी कहा गया है। गुरू ग्रन्थ साहिब के अंग 472 पे कवीर जी की बाणी में लिखा है; – 'हम गोरू तुम गोआर गोसाईं जन्म जन्म रखवारे। कबहूं ना पारि उतारि चराईंह केसे खसम हमारे" तथा अंग 338 पे है ;– 'आस पास धन तुलसी का विरवा माझ बनारिस गाओं रे। उअं का सरूप देखि मोहि गोआरिन मो को छोड़ ना आउुं ना जाहू रे"। आज भी हम खुद को गौर / गौआर व दूसरों को कोर / कौरव मानते हैं।

महाँभारत के पशचात दो कौम सामने आइ कौरव जिनें बाद में कोर कहा गया व पाँड़व जिनें बाद में भगवान कृशण जी के सखा होने के कारण गोआर कहा गया। महाँभारत के समय गौआर / गोरों को आर्य कहा गया था न कि राजपूत। गौआर समय के साथ राजा बने व आगे चलते हुये गोआर समाज में राजपूती गोत्र प्रसार, चौहान, राठौड़ व तन्वर का उुलेखय मिलने लगा व राजपुत्र होने की वजह से गौआर राजपूत कहलाने लगे।गौर/गौआर राजपूत 36 शाही धरानों में से इक हैं जो पंथवी राज चौहान के दरबारी कवी चाँदबरदाई ने पर्थिवी राज रासौ मैं.. लिखा है। उनके बाद कर्नल टाड़ ने अपनी किताब 'राजपूत कबीलों

का इतिहास' के पन्ना 99 पे में राजपूतों के 36 शाही धरानों की सारणी दी है जिस में गोर धराने का भी जिकर लिखा है। समाज के महान विदवान मोती राज राठौड़ ने भी 'गौर बंजारा जनजाती का इतिहास' में पन्ना 16 पे लिखा है;- 6वी सदी से 9 वी सदी तक बूंदी, कोटा, साँबर, चितौड़ छौटी सादड़ी, उदयपुर, जमशेदपुर, सलाहरगड़, मन्दसोर, प्रतापपगड़, बाँसवाड़ा व रतलाम इलाकों में गौर समाज का / वंश का राज था।

कर्नल टाड़ ने अपनी किताव 'इनालि अेड एनटीकस आफ राजसथान' के पन्ना 138 पे लिखा है कि बंगाल के पुराने राजा गौर बंश के थे व उुन की राजधानी का नाम लखनौती था। मध भारत मे भी इक रियासत 'सूपुर' थी जो 1809 मे, मराठों ने जीत ली थी। सवामी गोकल दास बंजारा भासकर के पन्ना 48 पे लिखते हैं कि बुन्धेलखंड़ का राजा छतरसाल बड़तीआ था। उुपर दी जानकारी से पता चलता है कि हम राजाओं की संतान हैं इस लिए राजपूत हैं व कूछ लेखक मित्रों का हमें राजपूत ना मानना गलत है। समय की जरूरत है हम अपना वंश जाने व खुद् को पहचाने तथा अपने रिशतों को संजोए, संभाले व बिरादरी में ही रहते हुये अपने आनेवाले समय को सजायें।

दसम ग्रथ के अधयन से भी पता चलता है कि सवय 1 से 2492 तक गुरू गोविंद सिंह जी ने जगह जगह गुआर गुआरनीं शबद् का इसतेमाल किआ है। टीका कारों ने इस प्रसंग में लिखे गुआर व गुआरनी का अर्थ गवाला किया है जैसे-

गवारिन के हरि कंचन से तन मह मन की मन तुल खुबा है,
खेलत है हरि के संग सो जिनकी करनी नहीं जाति सुबाह है,
खेलन को भगवान रचि रसके हित चित्र वचित्र सभा है
जयों उपजी उपमा तिन मह ब्रिखभान सुता मनो चन्द्रप्रभा है। (अंग 590)
मेघ मझार अउु देव भले गवरी करि के हित गावह
जैत सिरी अर मालसिरी नट नायक सुन्दर भात बसावह,
रीझ हरि ब्रिज की सब ग्वारिन सुर जे सुन पाचह,
अउरन की बात कहाँ कहिए तजि इन्द्र सभा सब आसन आवह। (अंग 594)
काहन विराजत ग्वारन मह कबहु शयाम कहे जिन को कुछ भउना,
तात की बात को नयन सुनह जिनके संग भात करिए बन गउना,
ताँ के लट लटकह तन माहे जयों साभिन के मन ग्यान दिवाउना,
पे उपजी उपमां मन लाग रहे अर राजन छउना। (अंग 599)

सवाल है कया हम हर इक को गोआर / गोर कह सकते हैं? नहीं। जैसे सभी वयपार करने वाला वंजारा नहीं हो सकता। इसी तराँ गोआर समाज के गोत्रों के लोग ही गोआर / गोर कहे जा सकते हैं। कूछ लेखक भाईं चन्द्रगुपत मौर्यं को चंद्रगौर लिखना ठीक समझते हैं और उददल और बसराज के सुतुत्र सुलखाण और मलवाण गौर वंजारा लिखते हैं। जब तक हम इनका गौर वंशिय गौत्र नहीं लिखते याँ किसी प्रमाणक पुसतक का हवाला नहीं देते। यह कहानी ही रहेगी तथा समाज को भ्रमित करने बाली होगी। हमारे सामने अनेकों लोग कथाए हमारे गोआर / गोर पुरवजों की ही हैं। ये देखना है कि किसी नायक, नायिकाए व राजा का गौर वंशी गोत्र नहीं है तो हम उुसे गोआर / गोर नहीं कह सकते। न ही हमें गलत लिख कर लोगों को भ्रमित करना चाहीए। शहीद भाईं मनी सिंह व बाबा लखी शाह का परिवार का सिख इतिहास में बहुत महतवपूंण योगदान है जो गोआर राजपूत हैं। शहीद भाईं मनी सिंह के परिवार में से 52 शहीद् गोर वंशी गोत्र पन्वार वंश बीझे का विंजरावत है जो आज भी हमारे समाज के सभी वरगों में पंजाब के बाजीगरों, बंजारा, लुबाना. सिरकी बन्द, बाण वट में मोजूद् है इस लिए इन्हें अकेला वंजारा कहना गलत होगा। गोर वंश के राजाओं का राज हुआ है इसी लिए ही हमारे गौर समाजके खास करके बंजारा समाज तथा सिरकी बन्द,वाण वट पंजाब मैं अपने साथ राजपूत गौत्र गैसे परमार, ग्रठैर, चोहाण यादव तथा तोमर लिखते हैं।मगर हमारे गोर वंश के कुछ लोग खुद् को बाजीगर व और ही कुछ कहते रहते हैं जो गलत है। हमारे हिसाब से राजपूत वो है जो राजा का पुत्र व वंशज है फिर गोर राजाओं के वंशज हम राजपूत कयों न हुये? अपने आप को छोटा आँकना कहाँ की भलाईं व इन्साफ है ?

-000-

10-11 जनवरी 2013 नेपाल में खिलाड़ी खेलते होए व विजय पँसन

www.handobarjot.blogspot.com officehando@gmail.com hando martial art

AMATEUR INTERNATIONAL HANDO COUNCIL